रंगमोहल दक्षीण दिशा की शोभा - मानिक पहाड़

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ।।

- ✓ बट पीपल की चौकी
- ✓ कुंज निकुंज वन
- ✓ हौज कोसर
- ✓ चौबीस हांस के महल
- ✓ मानिक पहाड़

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ।।

परमधाम विहार
सुखपाल, तख्तरवा से मानिक पहाड़

शुक्ल पक्ष (सुद)	
एकदासी	मानेक पहाड़

अर्स हौज दोऊ बीच में, मोहोल मानिक पुखराज।
जेता नजीक हौज के, तासों मोहोल मानिक रहे बिराज ॥१७॥

ए चारों हुए दोरी बन्ध, सामी अछर नूर सोभित।
ए हक हुकम बोलावत, इत और न पोहोंचे सिफत ॥१८॥

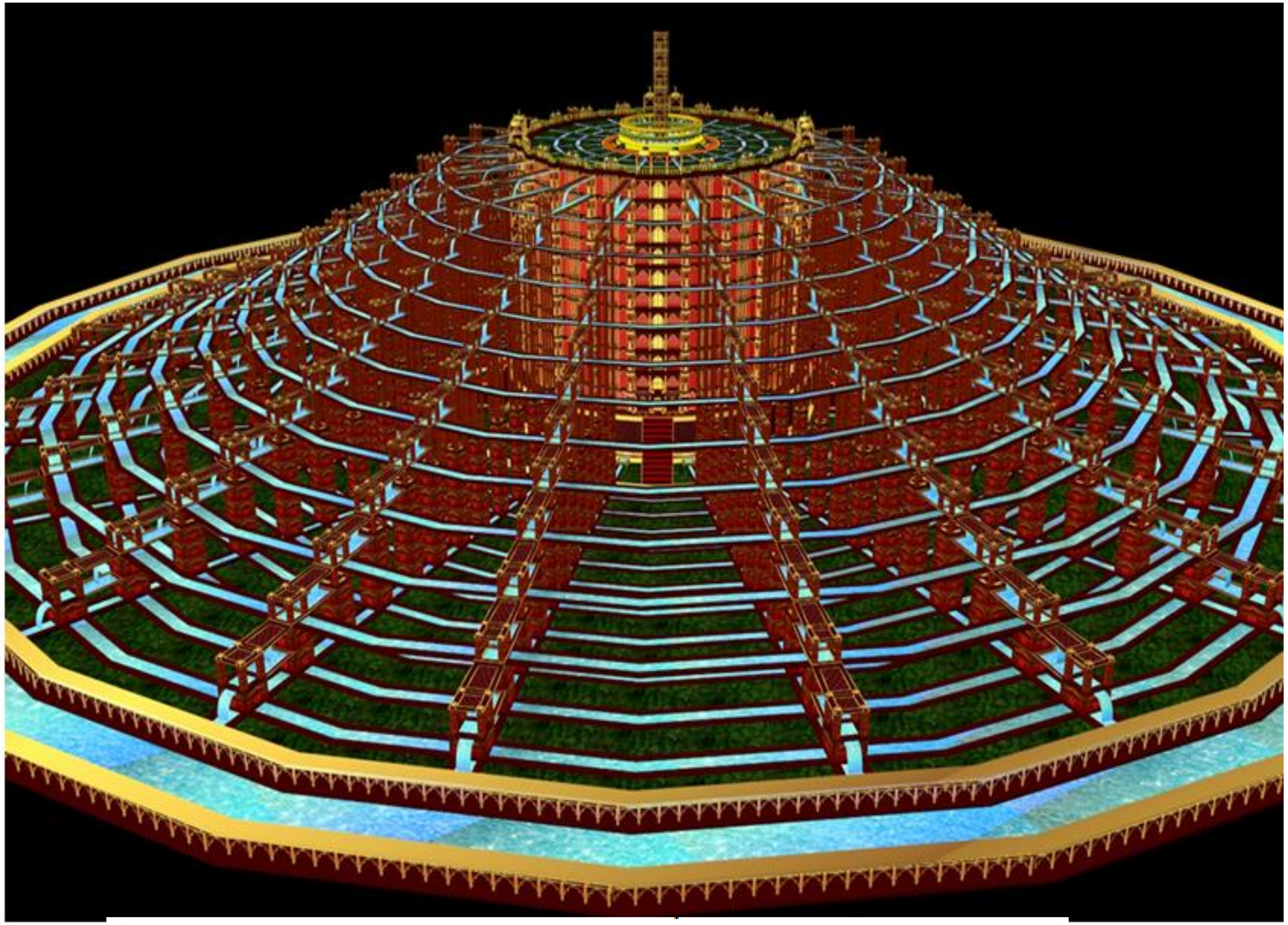

साथजी देखो मोहोल मानिक, जो कहे द्वार बारे हजार ।
सोभा सुन्दरता इनकी, ए न आवे बीच सुमार ।।१।।

- मणीक पहाड़ की शोभा - भोम भर चबूतरा , 12000 भोम
  - 12000 हांस , 400 कोस का हांस
  - बड़े दरवाजे & चबूतरा (100 कोस)
  - गोल गुर्ज – 12000
  - छोटे दरवाजे – 12000 , चोरस गुर्ज - 24000
  - हवेली – 12000 , 400 कोस उची
    - महल – 12000 , 300 कोस उचा
      - मंदिर – 12000 , 200 कोस उचा
        - कोठारी – 12000 , 100 कोस उचा
  - माणिक महल – 12000 (भोम भर चबूतरा)
    - गुर्ज – 12000
  - चबूतरा - भोम भर उचो
    - हिण्डोले – 12000
    - बगीचा – 12000
    - स्तूल & फुवारा – 12000
- मणीक पहाड़ की चादनी की शोभा
  - चबूतरों - भोम भर चबूतरा
  - ताल -
  - देहलान - भोम भर चबूतरा पर
  - नहेरे - 12000
  - कुन्द - 12000
  - बगीचा – 12000
  - हिण्डोले
  - टापू महल – 20 भोम , भोम भर चबूतरा पर
    - चेहबचा , बगीचा, बेठक
- माणिक पहाड़ की बहार की शोभा
  - ताल
  - महल
  - हिण्डोले
  - नहेर
  - महानदी
- माणिक पहाड़ की हद की शोभा - बड़ों वन ,मधुवन , महावन

मानिक पहाड़ का खड़ा दृश्य – बहार की शोभा

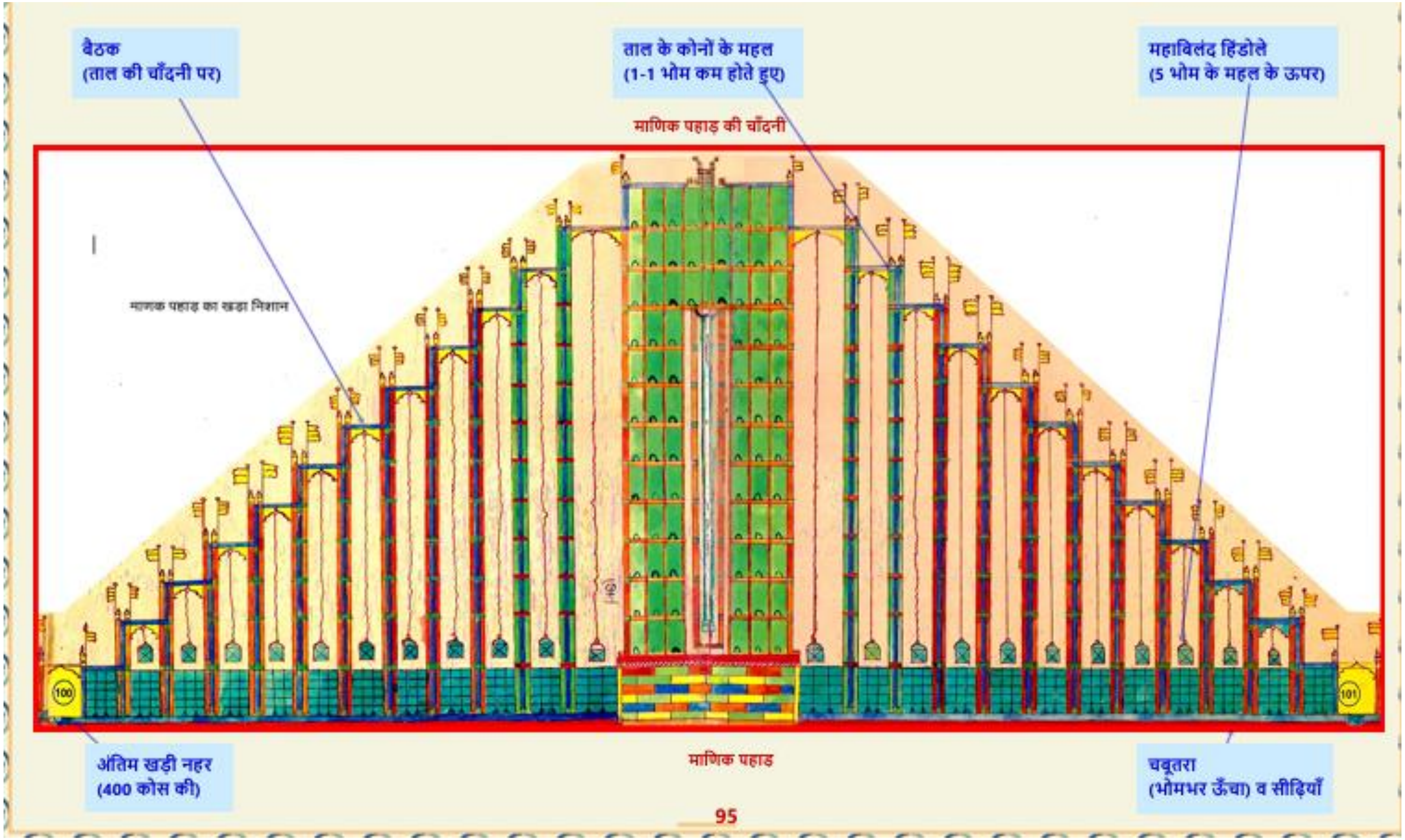

मानिक पहाड़ का खड़ा दृश्य – बहार की शोभा

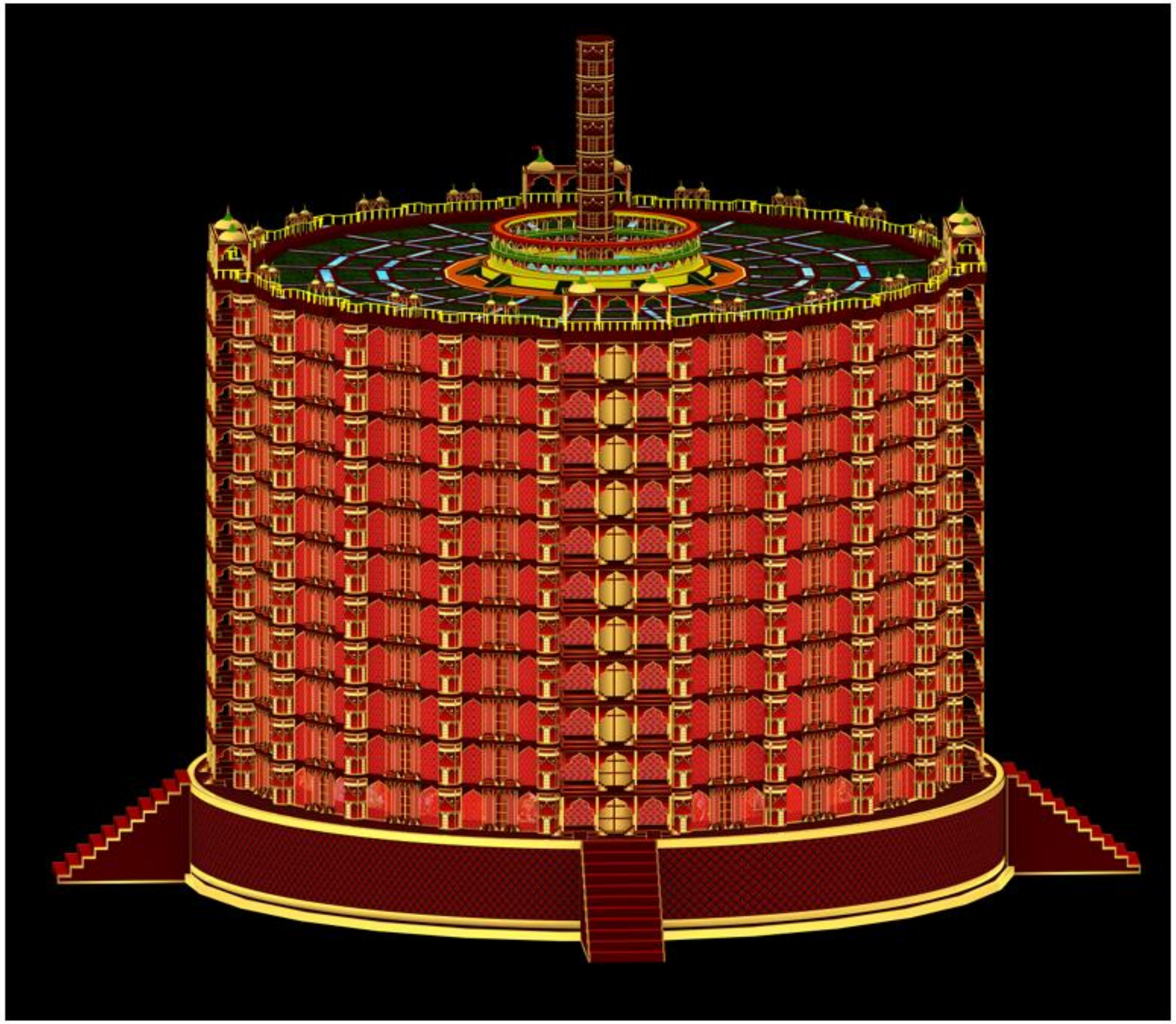

मानिक मोहोल रतन मय, झलकत जोत आकास ।
नूर पूरन पूर भरया, रूह खोल देख नैन प्रकास ।।५।।

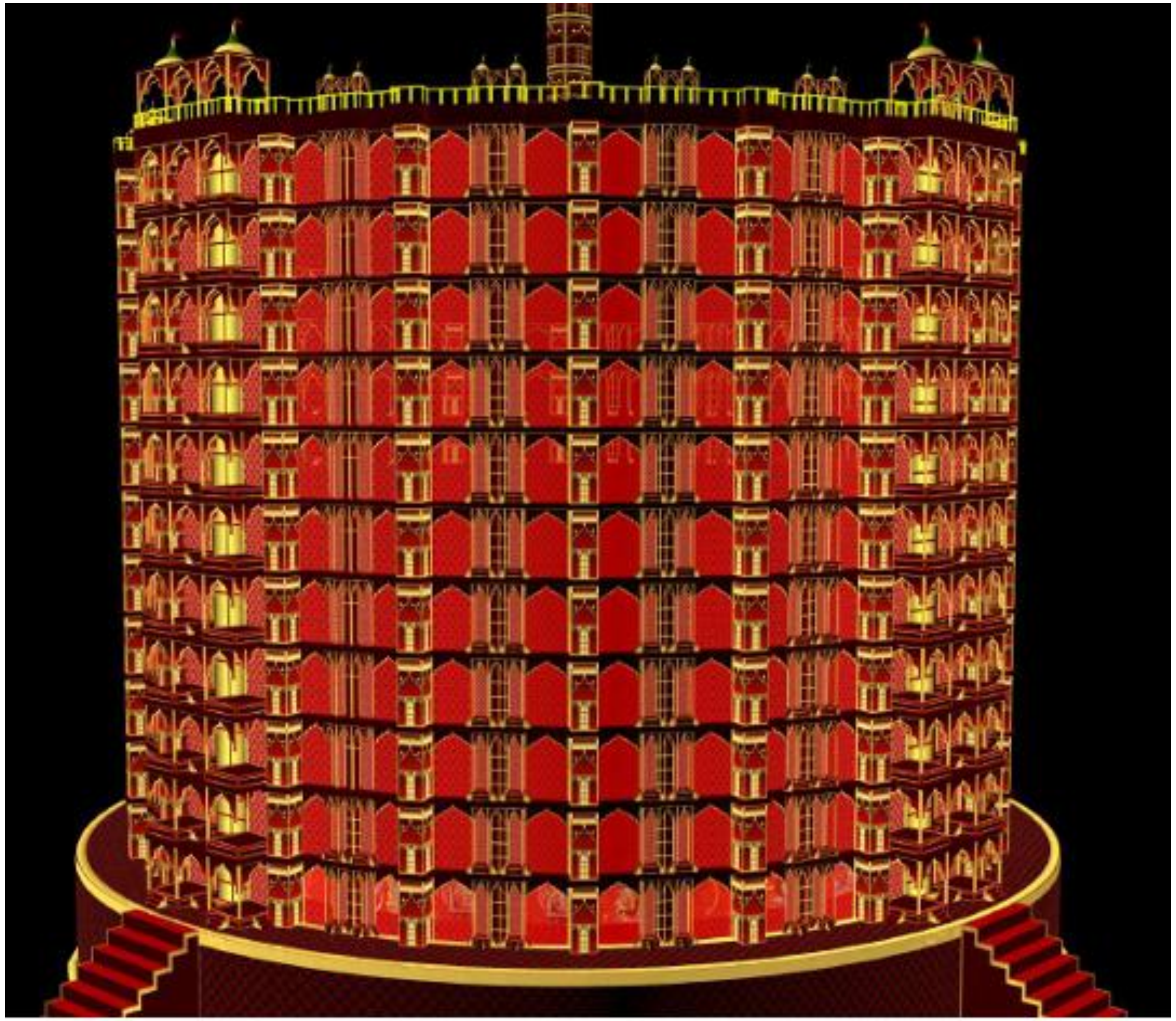

एक देख्या मोहोल मानिक का, ताए बड़े द्वार बारे हजार ।
हिसाब न छोटे द्वारों का, सोभा सिफत न आवे पार ।।२।।

मानिक पहाड़ – दिशा के बड़े दरवाजे की शोभ

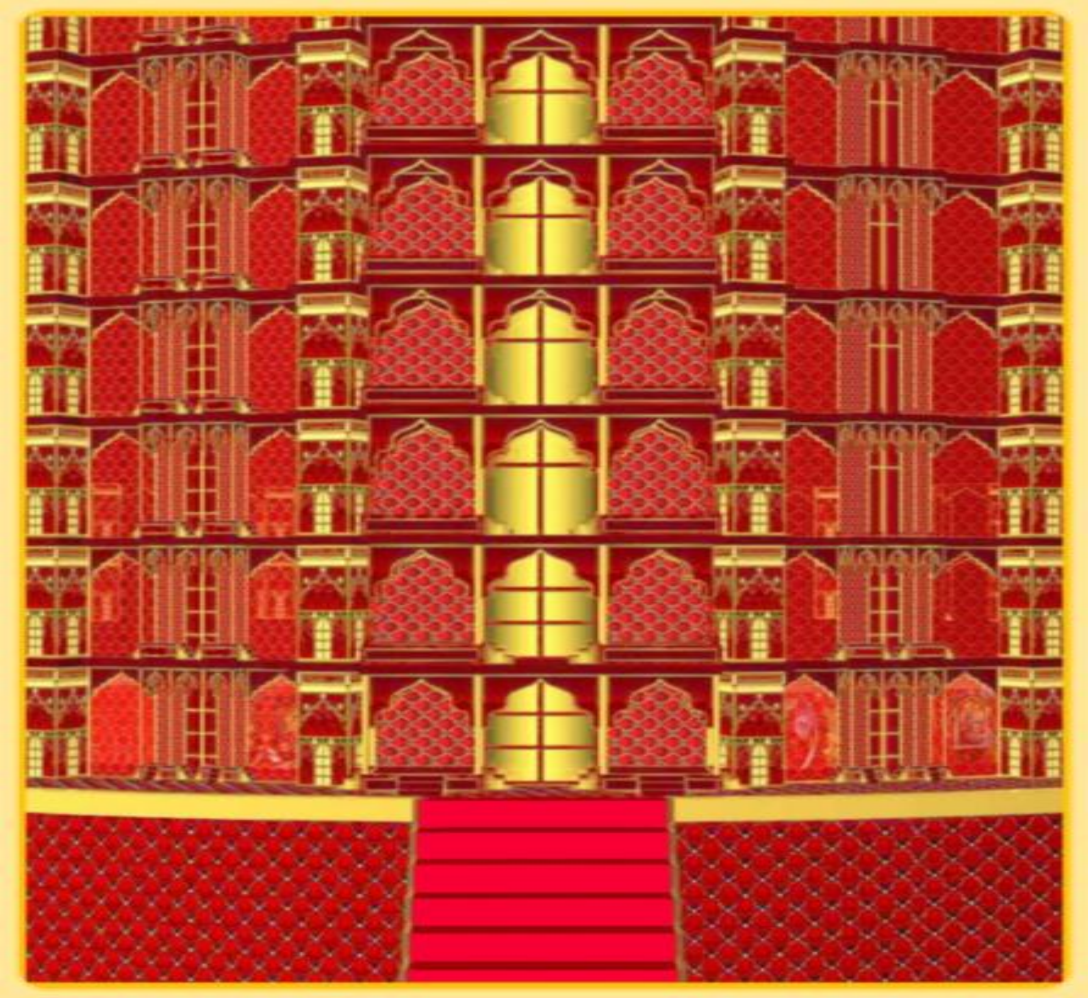

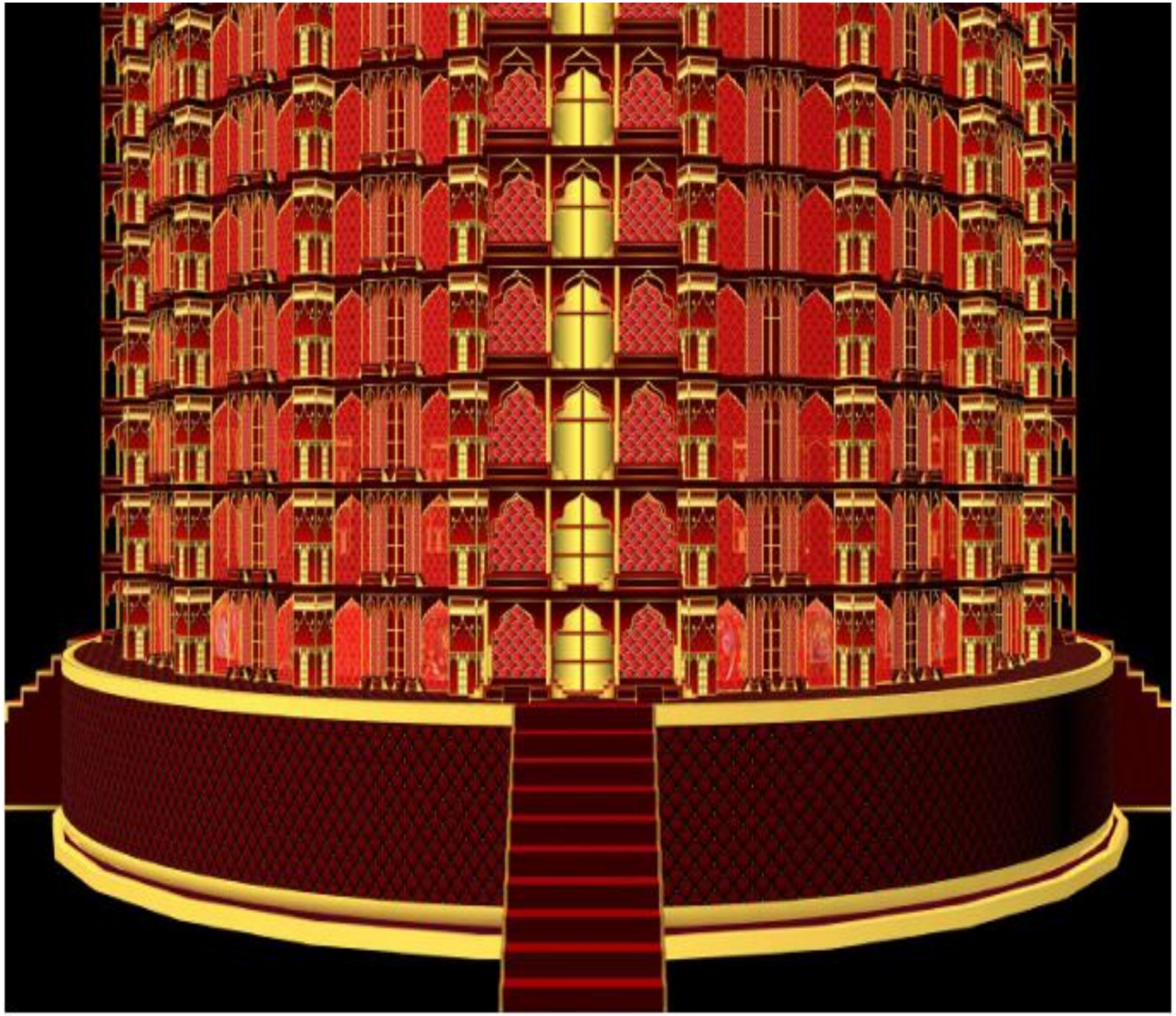

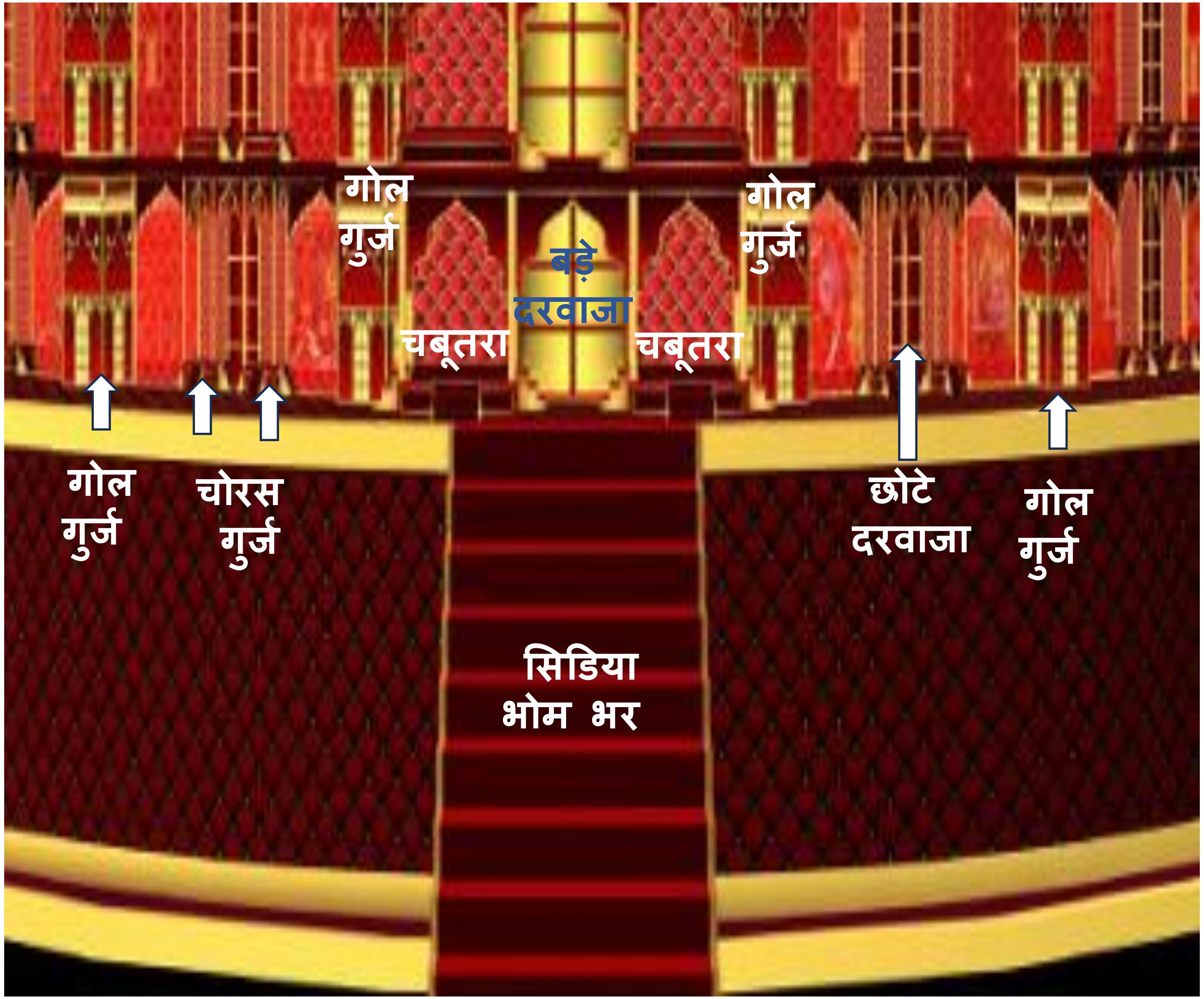

साथजी देखो मोहोल मानिक, जो कहे द्वार बारे हजार ।
सोभा सुन्दरता इनकी, ए न आवे बीच सुमार ।।१।।
एक देख्या मोहोल मानिक का, ताए बड़े द्वार बारे हजार ।
हिसाब न छोटे द्वारों का, सोभा सिफत न आवे पार ।।२।।
ले जिमी से ऊपर मोहोल मानिक, कम ज्यादा कहूं नाहें ।
सरभर सोभा सब इमारतें, जल बन हिंडोले मोहोलों माहें ।।३।।

मानिक पहाड़ की अंदर की शोभा

पेहेली फिरती दिवाल फेर देखिए, तिन बीच मोहोल अनेक ।
जो जो खूबी देखिए, जानों एही नेक सों नेक ॥१५॥
एक हवेली चौरस, दूजा मोहोल गिरदवाए ।
ए खूबी मोमिन देखसी, नजरों आवसी ताए ॥१६॥
मैं गिरद कही चौरस कही, पर कई हर भांत हवेली ।
जाके आवें ना मोहोल सुमार में, तो क्यों जाए गिनी पौरी ॥२५॥

मानिक पहाड़ की अंदर की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

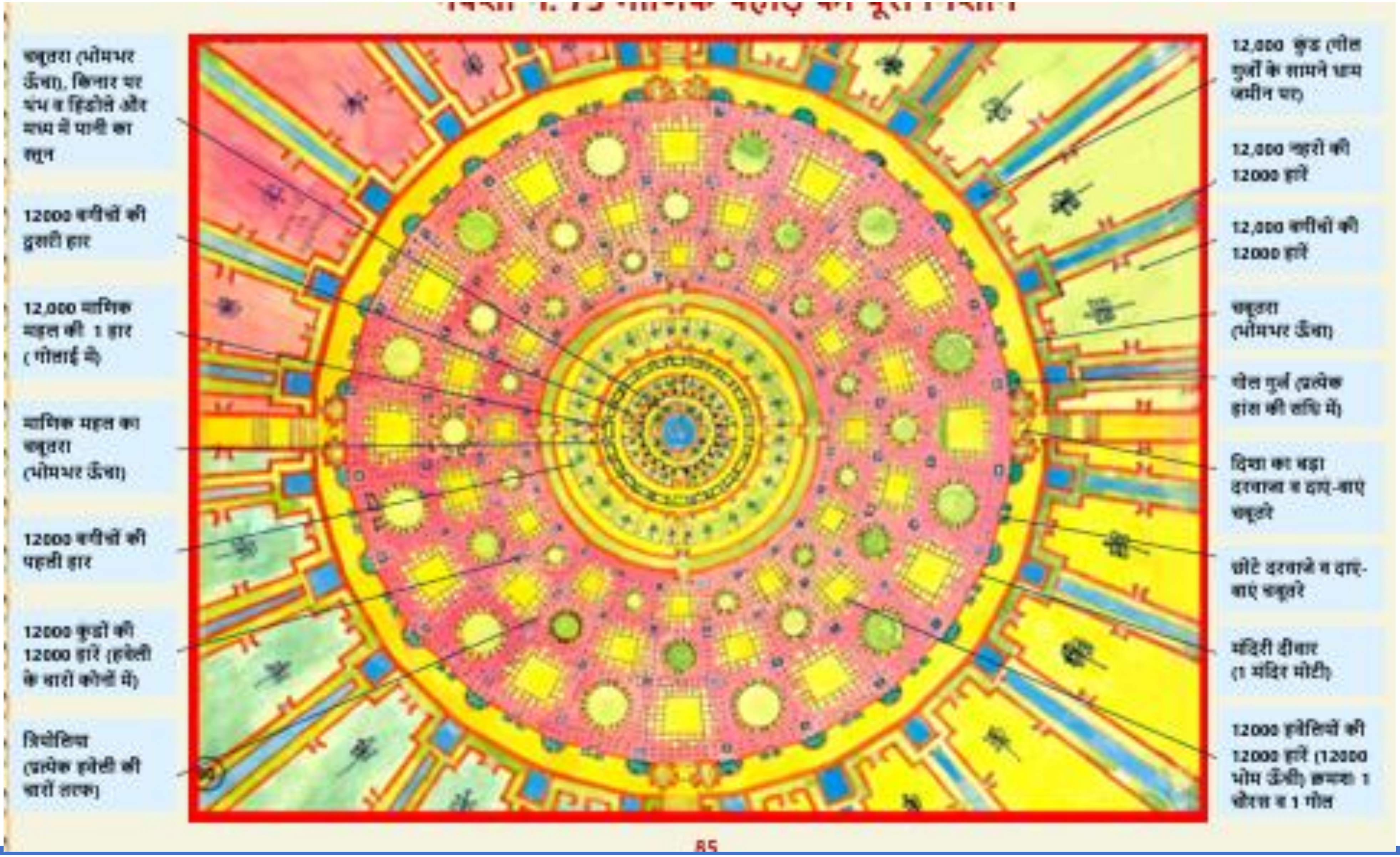

मानिक पहाड़ की अंदर की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

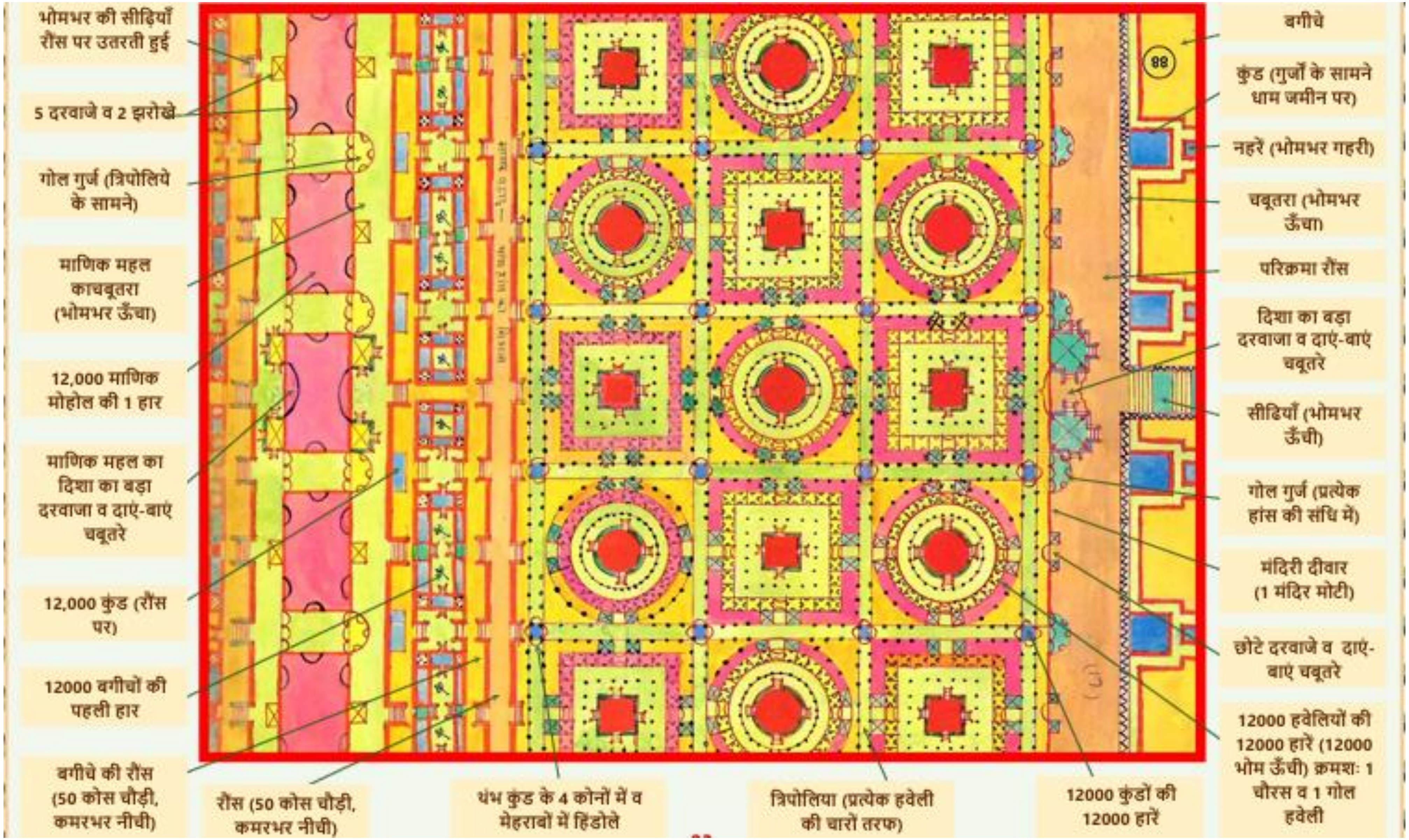

मानिक पहाड़ की अंदर की शोभा

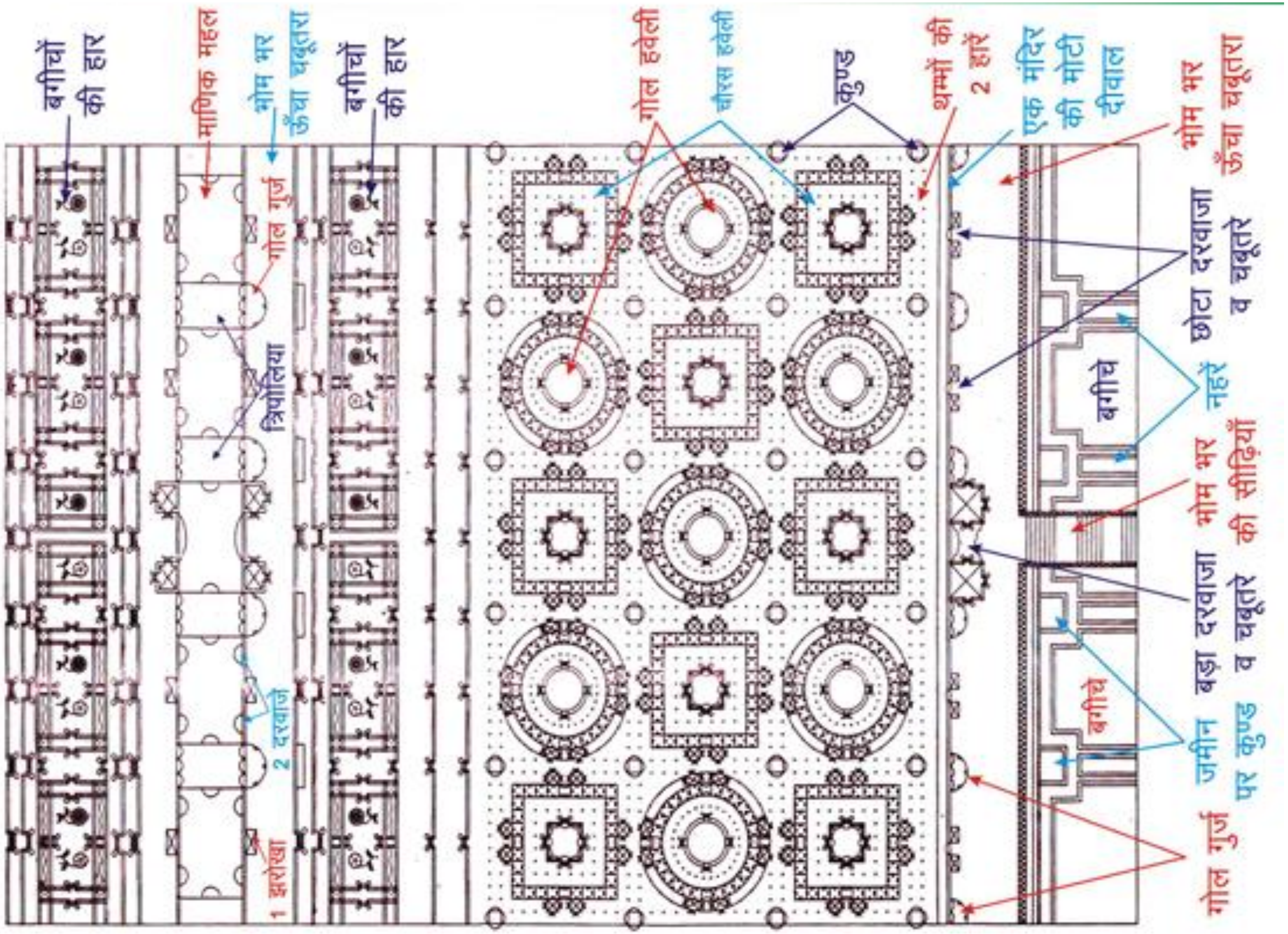

पेहेली फिरती दिवाल फेर देखिए, तिन बीच मोहोल अनेक ।
जो जो खूबी देखिए, जानों एही नेक सों नेक ॥१५॥
एक हवेली चौरस, दूजा मोहोल गिरदवाए ।
ए खूबी मोमिन देखसी, नजरों आवसी ताए ॥१६॥

माणिक पहाड़ की अंदर की शोभा

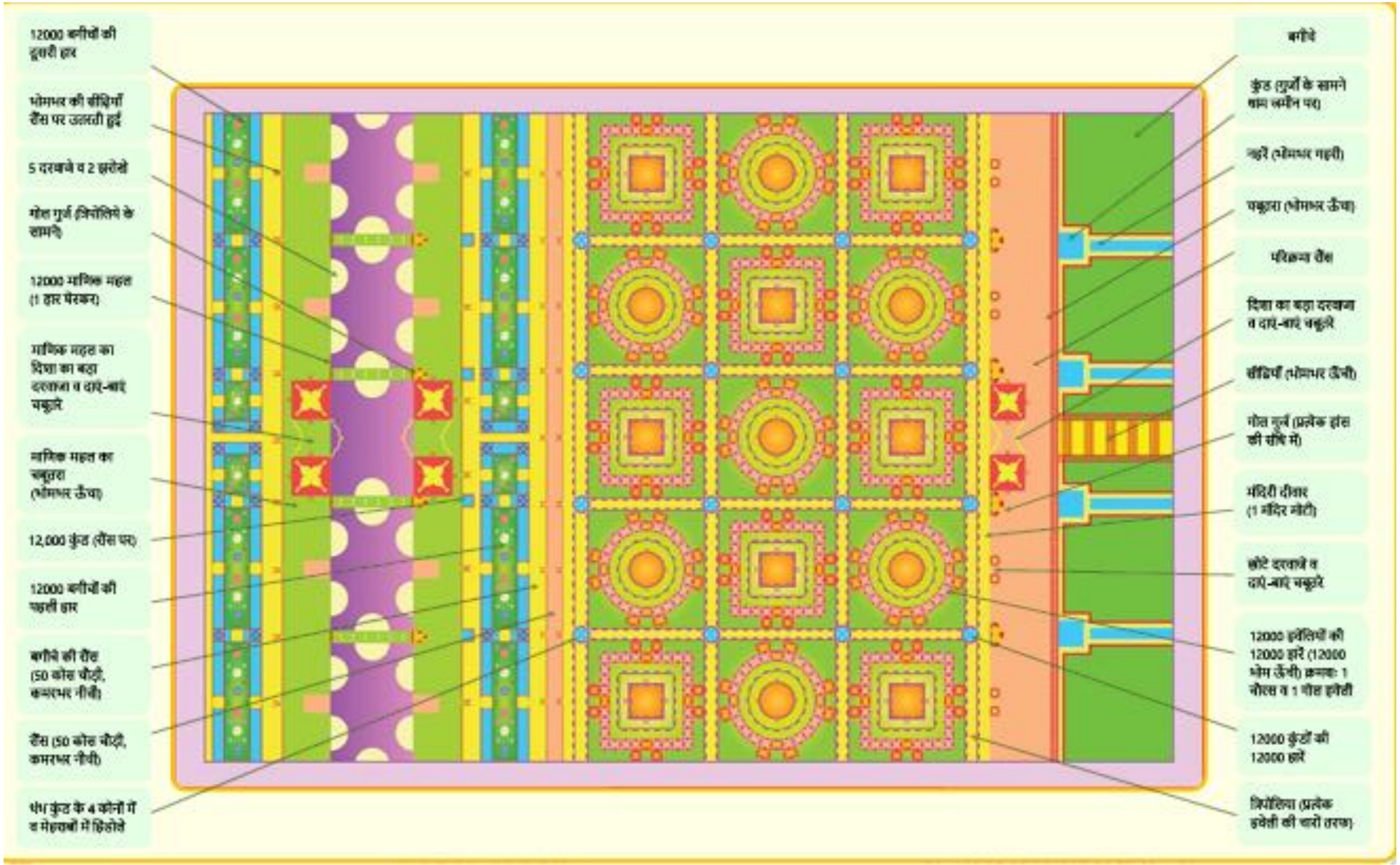

मानिक पहाड़ की अंदर की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

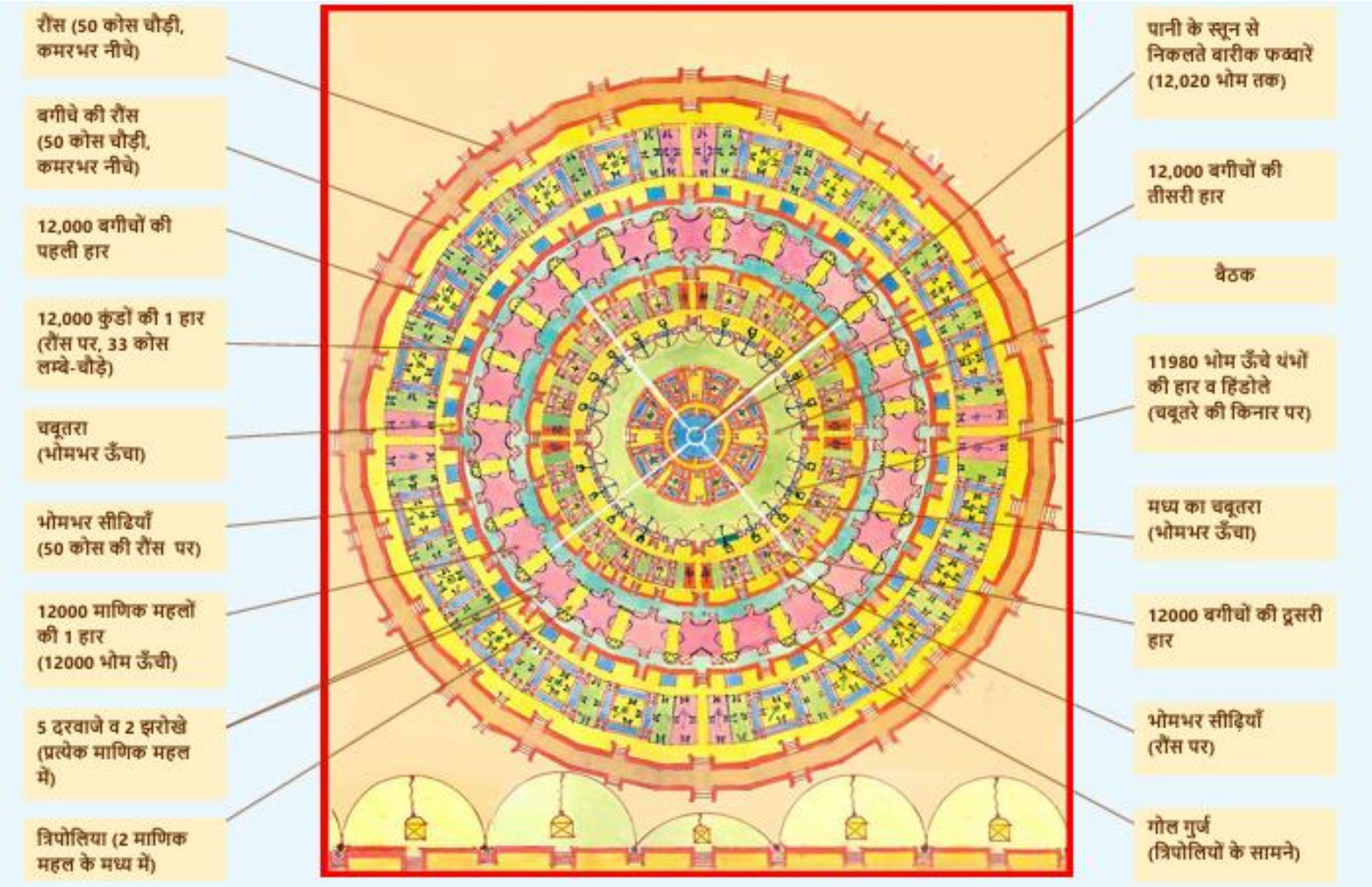

मानिक पहाड़ की अंदर की शोभा

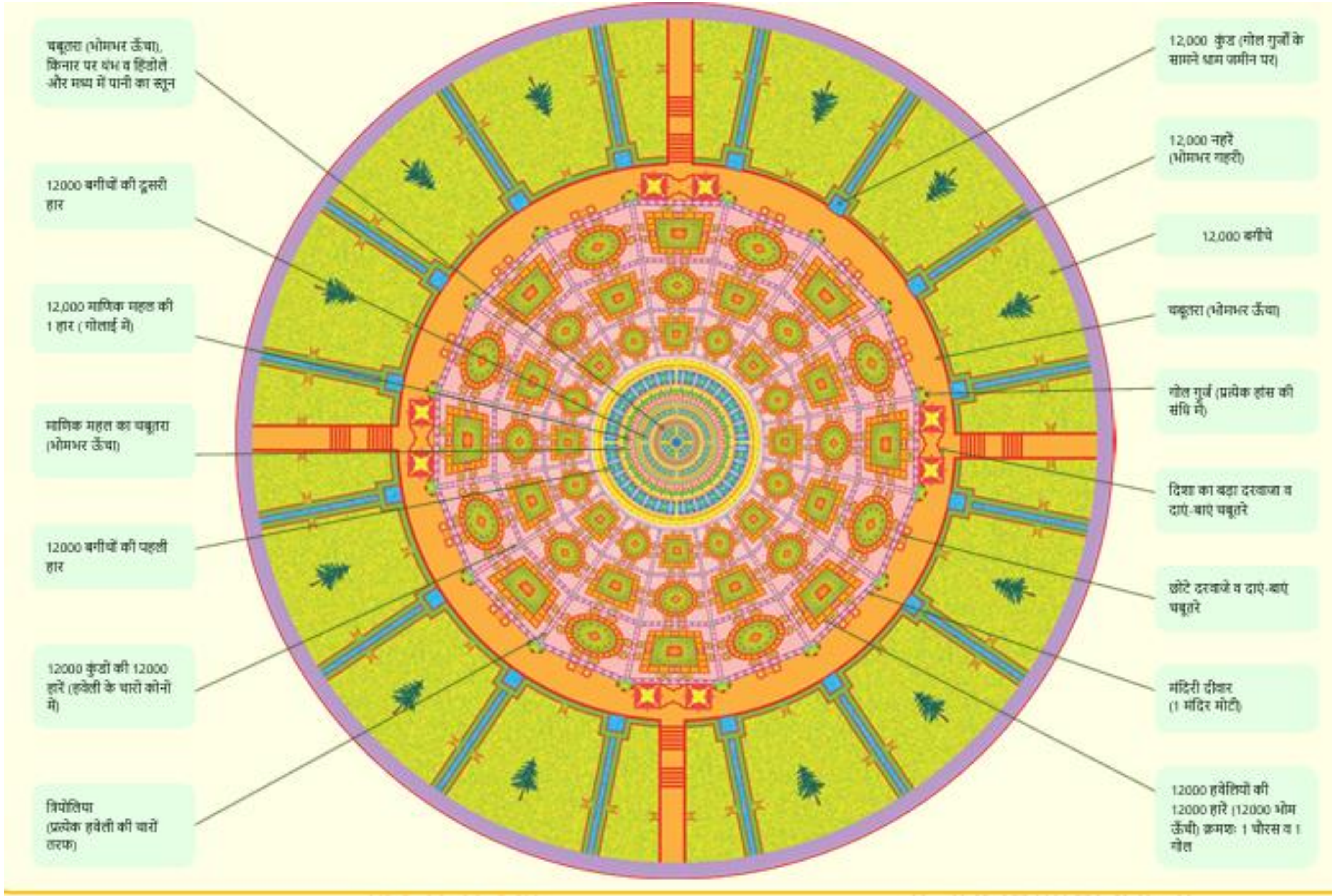

मानिक पहाड़ की अंदर की शोभा - दो हवेली के मध्य आए त्रिपोत्रलये

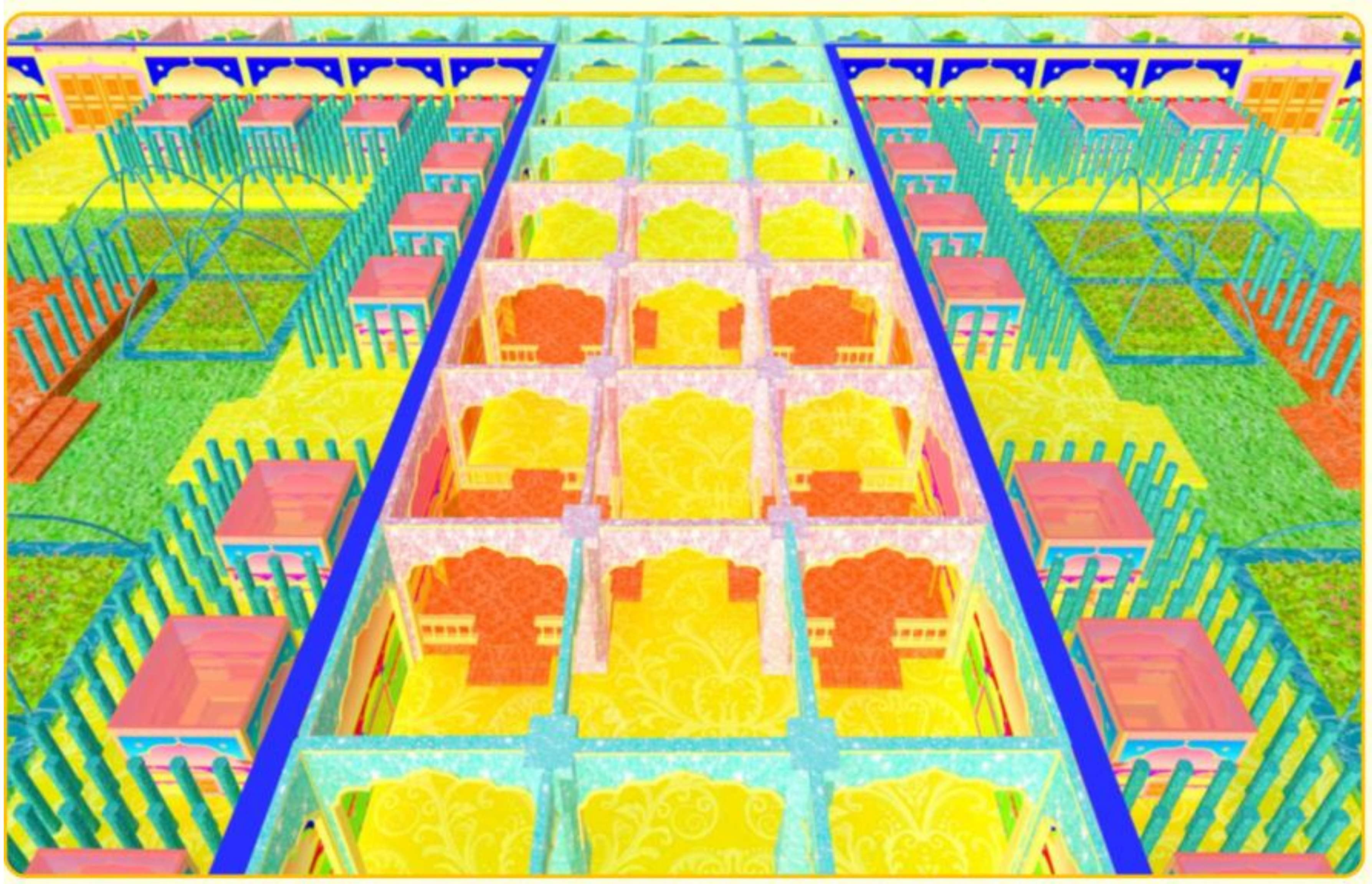

मानिक पहाड़ हवेली , महल , मंदिर & कोठरी की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

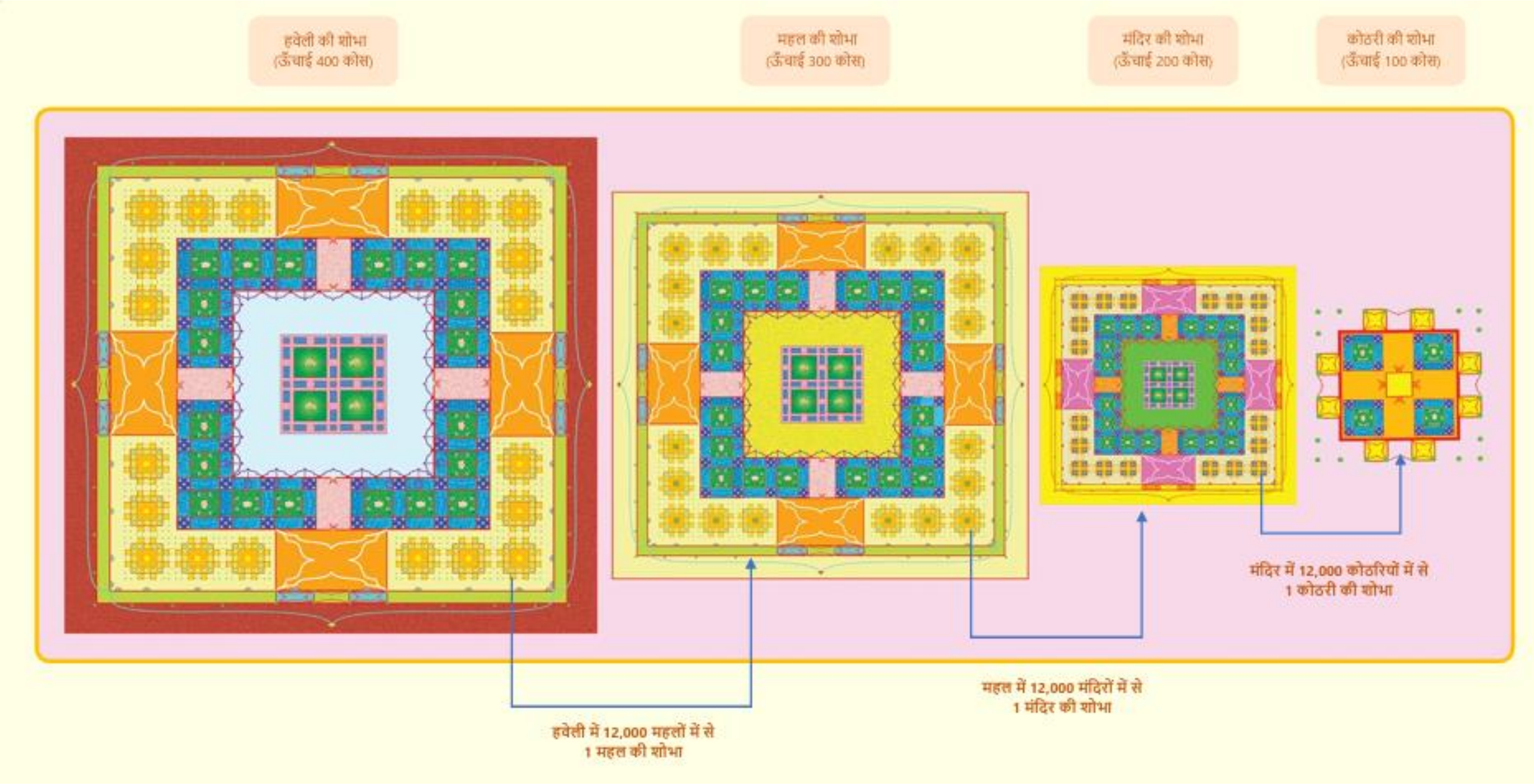

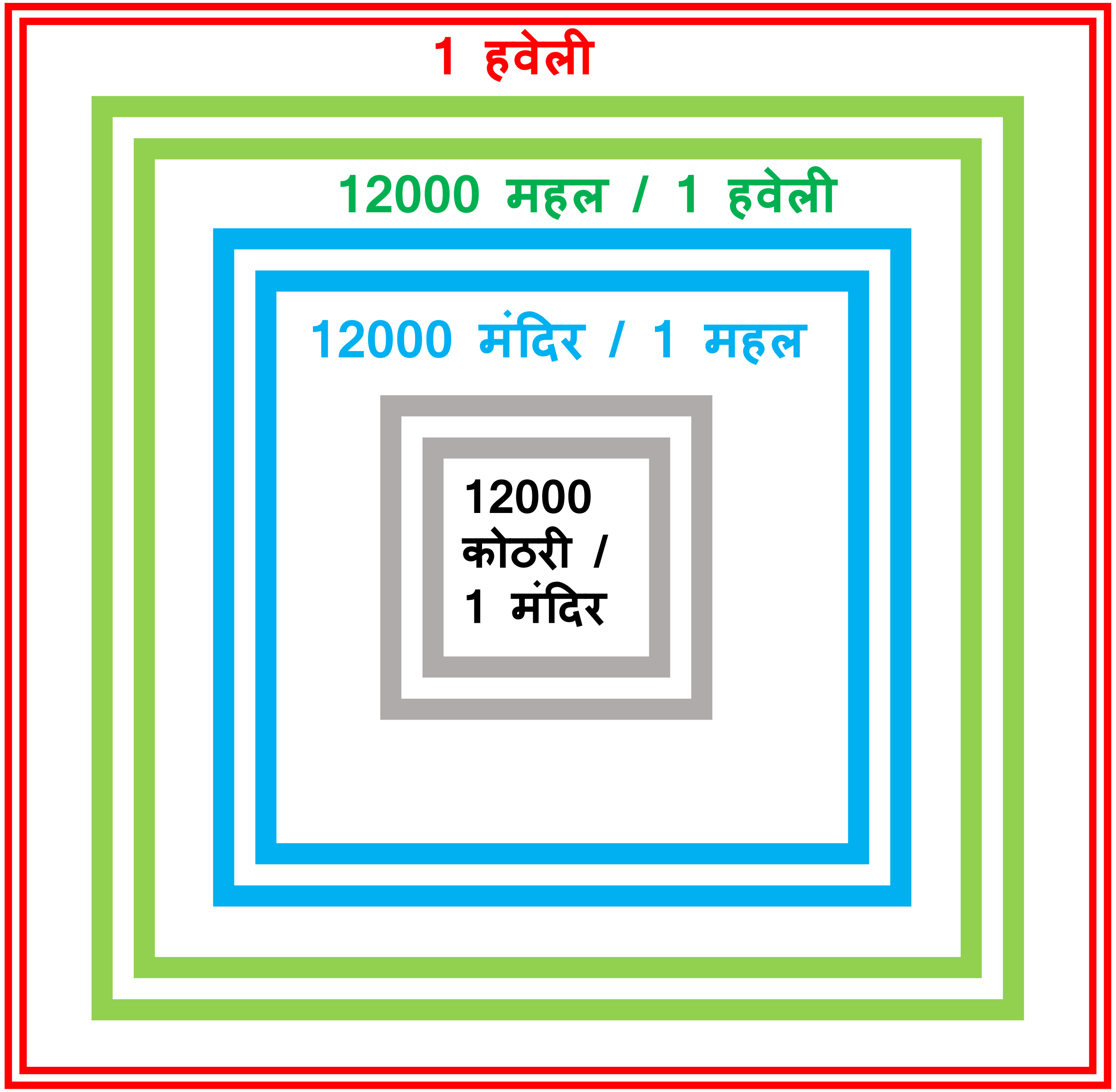
1 हवेली
12000 महल / 1 हवेली
12000 मंदिर / 1 महल
12000 कोठरी / 1 मंदिर

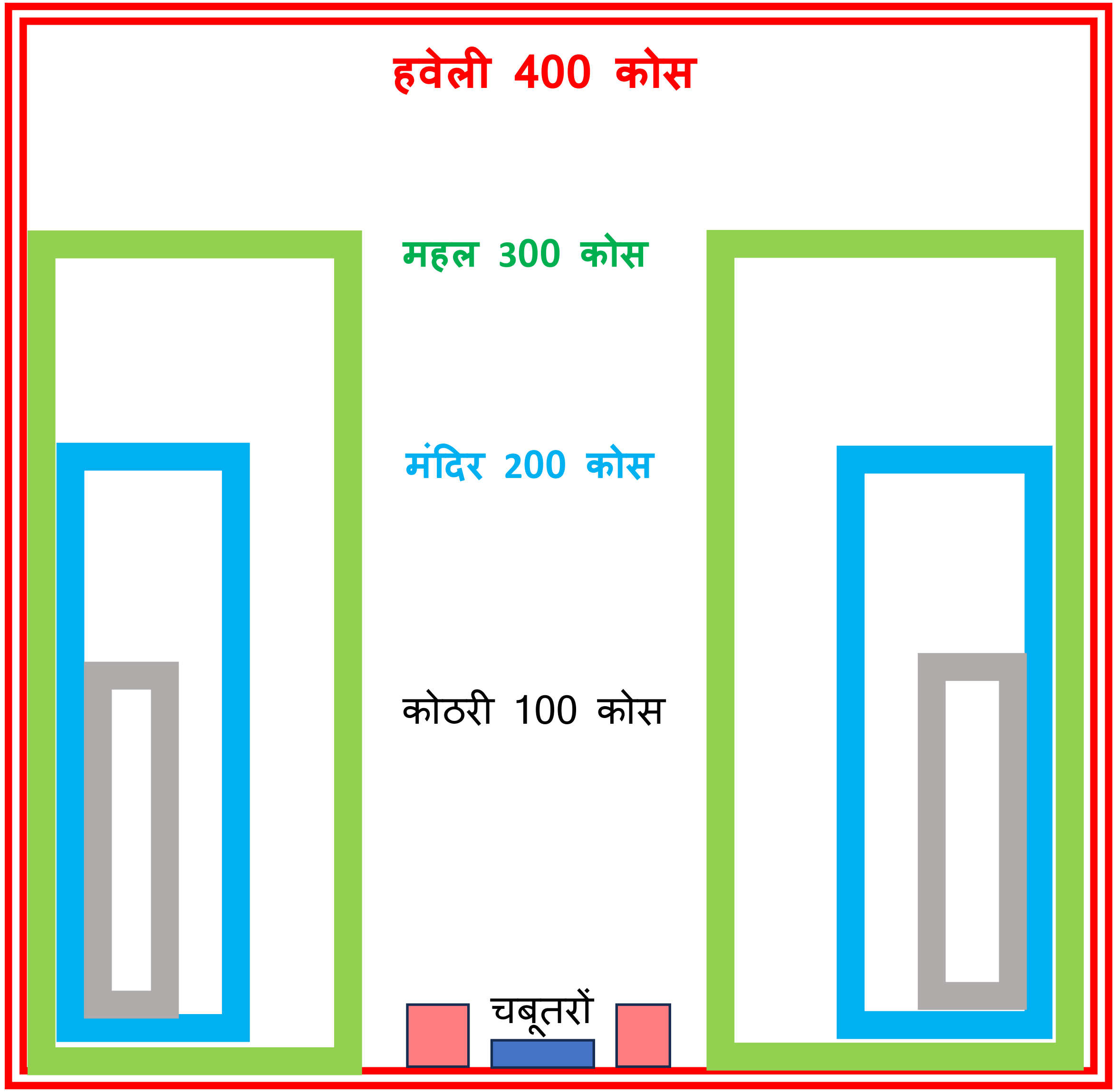
हवेली 400 कोस
महल 300 कोस
मंदिर 200 कोस
कोठरी 100 कोस
चबूतरों

कहे बारे हजार मोहोल फिरते, कही हुकमें तिनकी बात ।
तिन हर मोहोलों बीच बीच में, बारे बारे हजार मोहोलात ॥२०॥

मानिक पहाड़ – चोरस हवेली की शोभा

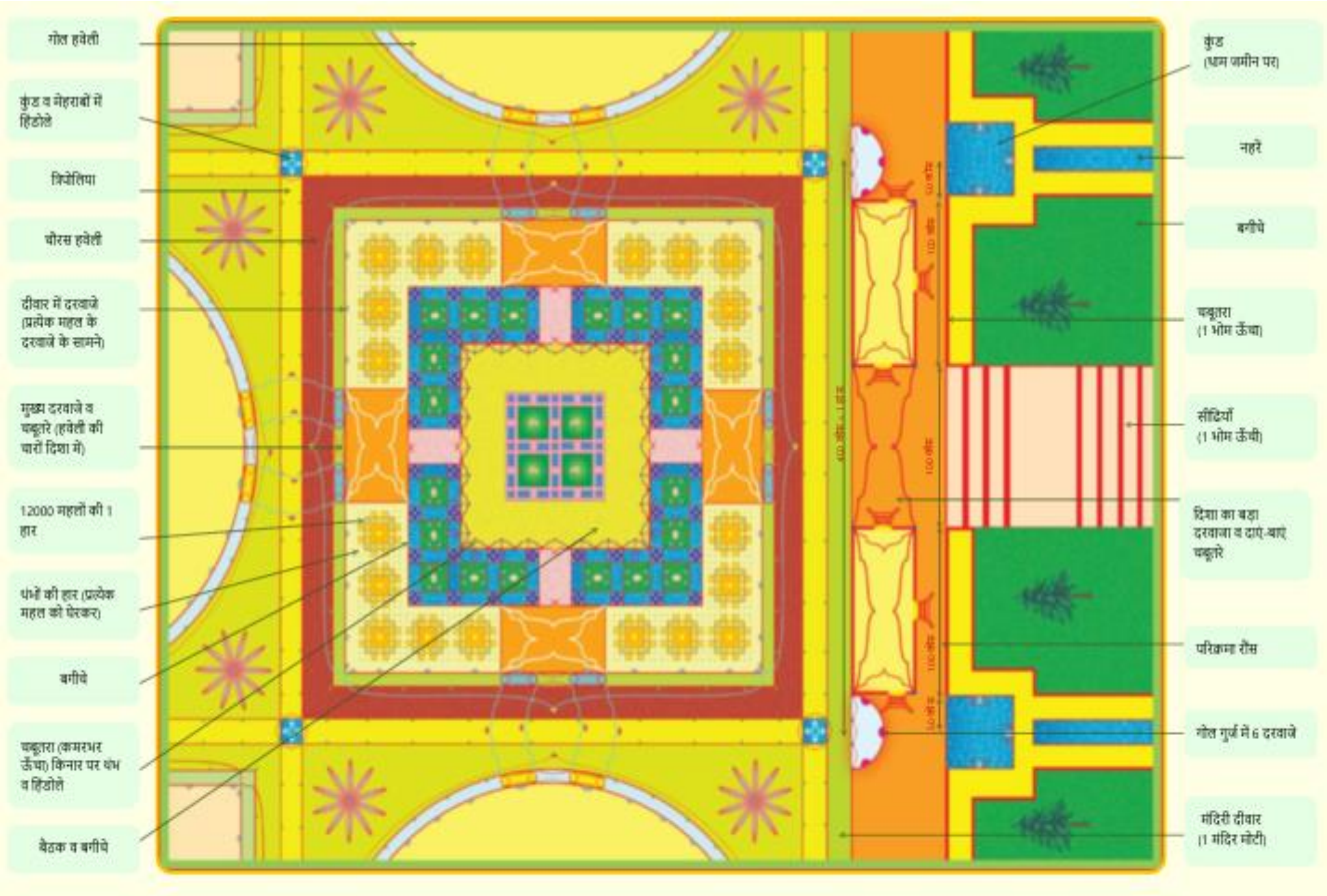

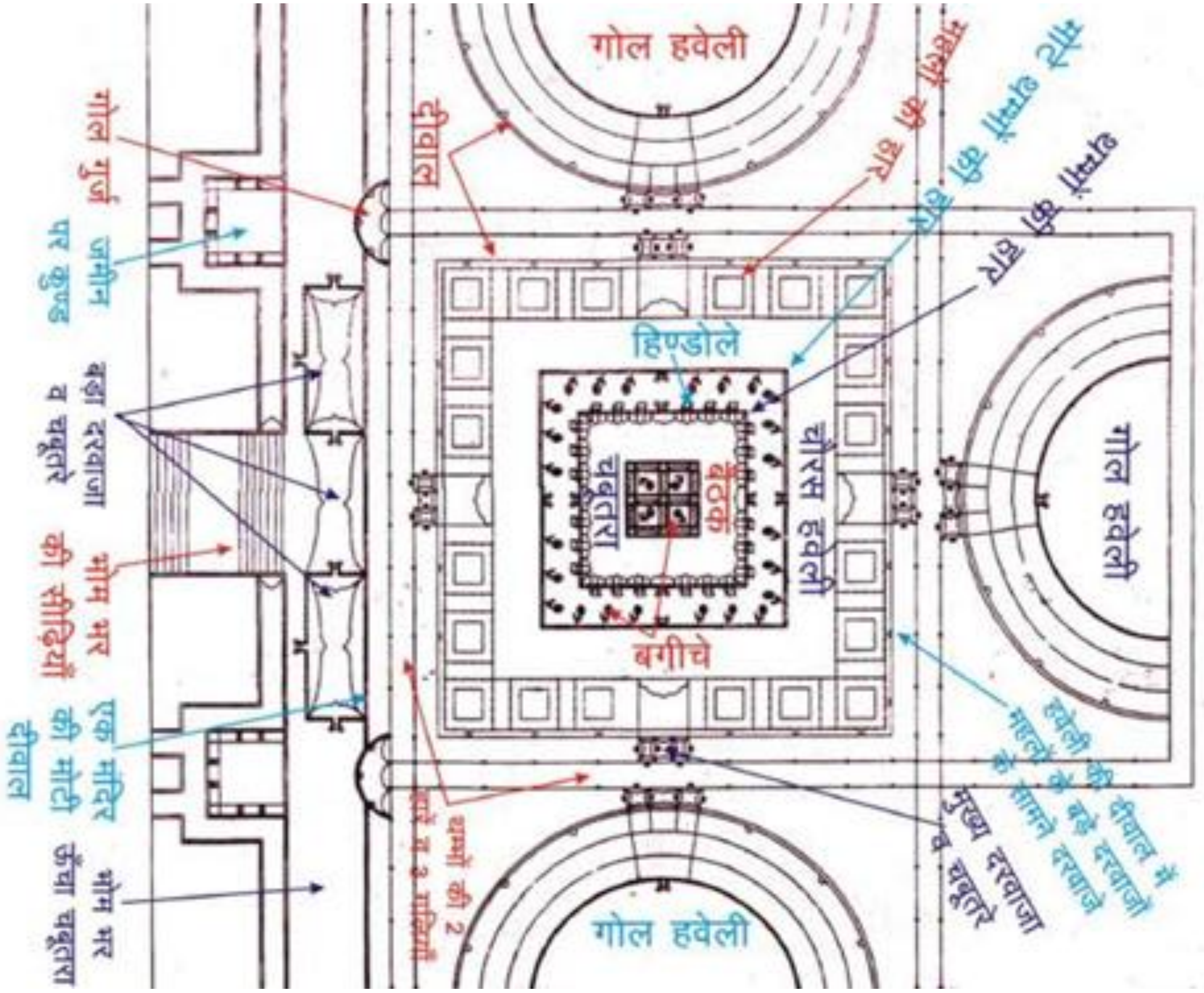
गोल हवेली
दीवाल
गोल गुर्ज
जमीन पर कुण्ड
बड़ा दरवाजा व चबूतरे
भोम भर की सीढ़ियाँ
एक मंदिर की मोटी दीवाल
भोम भर ऊँचा चबूतरा
हिण्डोले
चौरस हवेली
बैठक
चबूतरा
बगीचे
गोल हवेली
थम्भों की 2 हारें व 3 गलियाँ
हवेली की दीवाल में महलों के बड़े दरवाजों के सामने दरवाजे
मुख्य दरवाजा व चबूतरे
गोल हवेली

मानिक पहाड़ - गोल हवेली की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

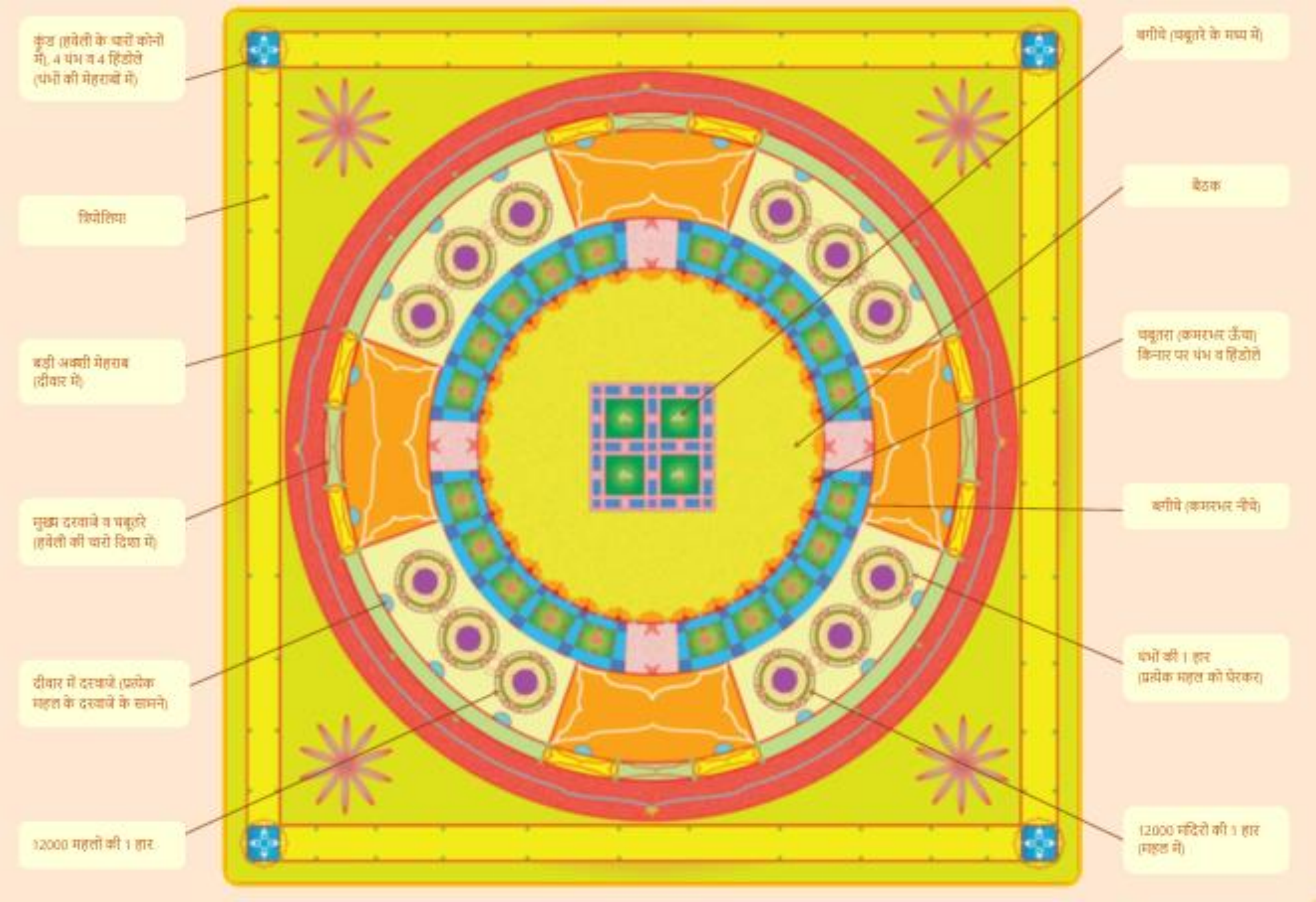

कुंड (हवेली के चारों कोनों में), 4 थंभ व 4 हिंडोले (थंभों की मेहराबों में)
त्रिपोलिया
बड़ी अक्षी मेहराब (दीवार में)
मुख्य दरवाजे व चबूतरे (हवेली की चारों दिशा में)
दीवार में दरवाजे (प्रत्येक महल के दरवाजे के सामने)
12000 महलों की 1 हार
बगीचे (चबूतरे के मध्य में)
बैठक
चबूतरा (कमरभर ऊँचा) किनार पर थंभ व हिंडोले
बगीचे (कमरभर नीचे)
थंभों की 1 हार (प्रत्येक महल को घेरकर)
12000 मंदिरों की 1 हार (महल में)

हवेली का मध्य का चबूतरा
(किनार पर थंभ व कठेड़ा)
महल
बगीचे
महल
महल
महल
का
चबूतरा
महल
हवेली की मंदिरी/मोटी दीवार

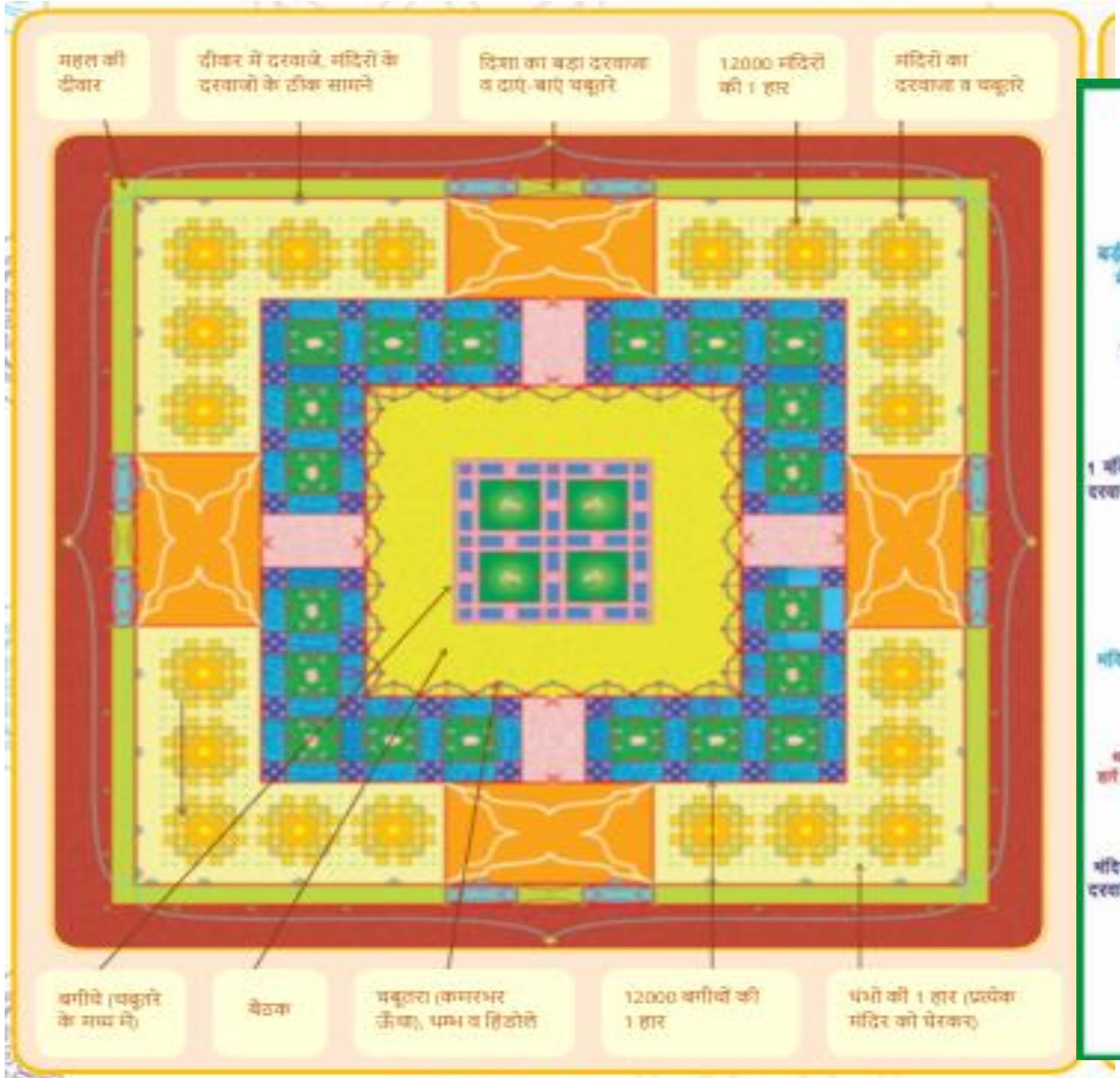

(एक महल की ऊँचाई-300 कोस)

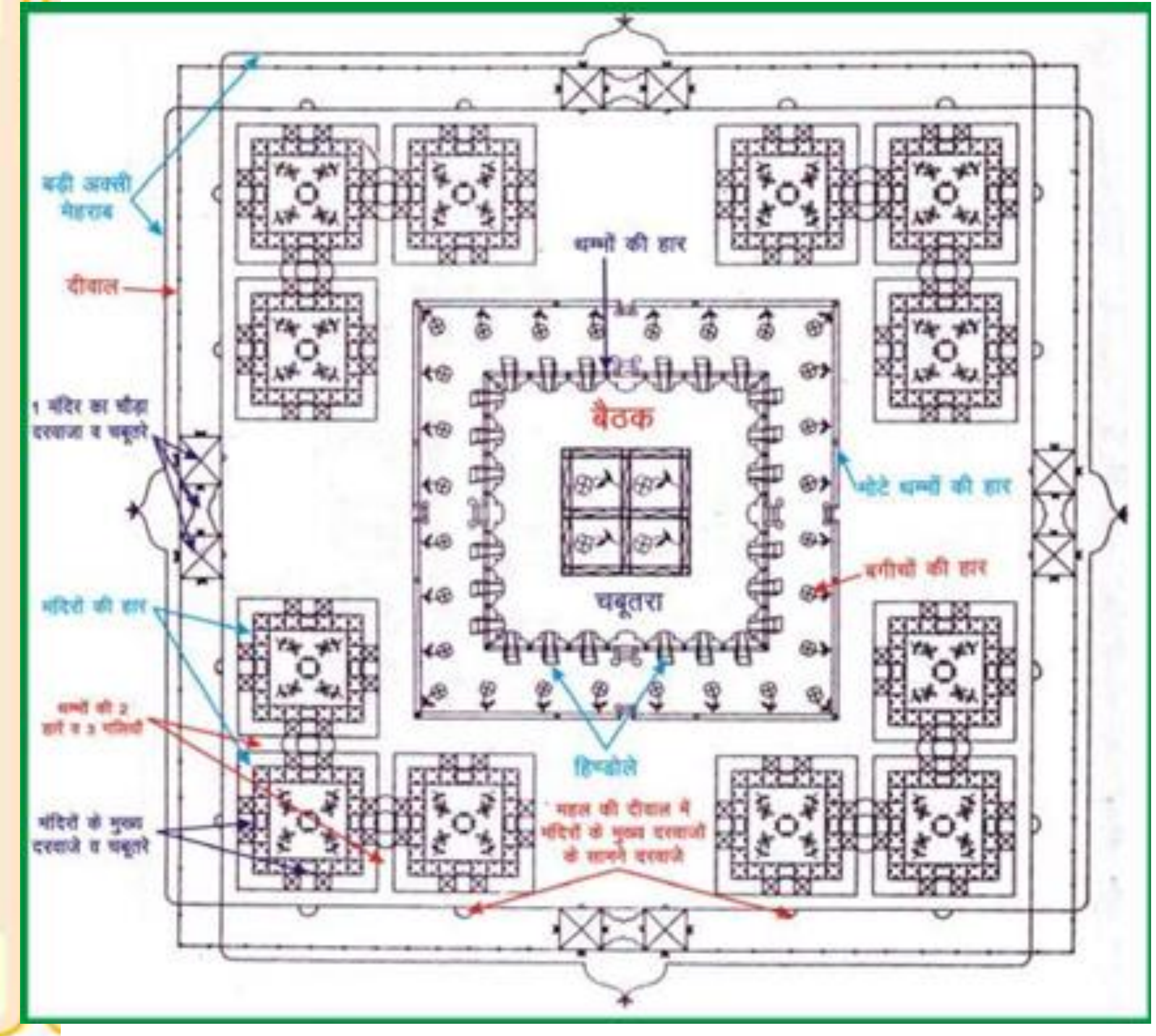

महल का चबूतरा
(किनार पर थंभ व कठेड़ा)
मंदिर
बगीचे
मंदिर
मंदिर
मंदिर का चबूतरा
मंदिर
महल की मंदिरी/मोटी दीवार

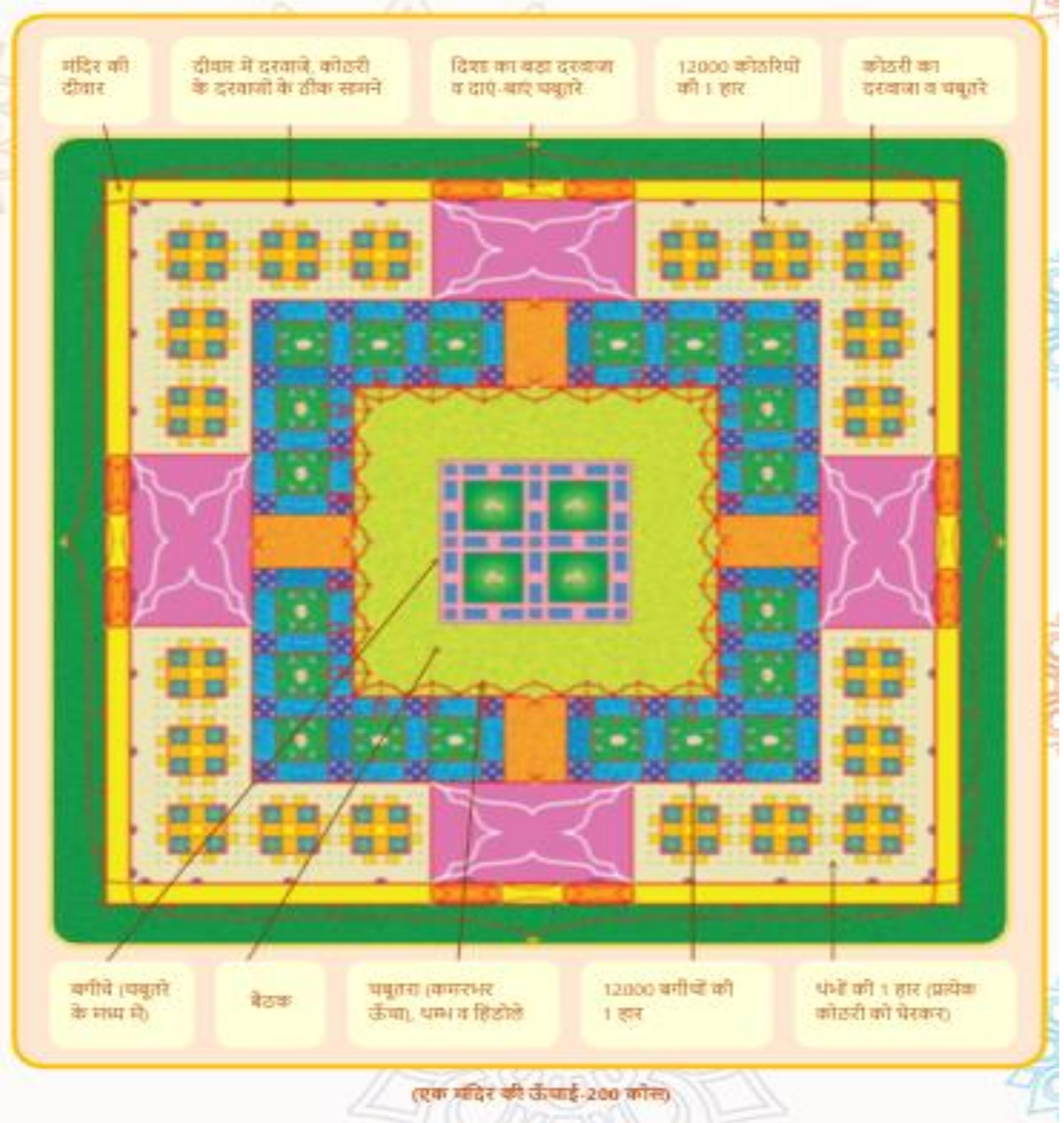
मंदिर की दीवार
दीवार में दरवाजे, कोठरी के दरवाजों के ठीक सामने
दिशा का बड़ा दरवाजा व दाएं-बाएं चबूतरे
12000 कोठरियों की 1 हार
कोठरी का दरवाजा व चबूतरे
बगीचे (चबूतरे के मध्य में)
बैठक
चबूतरा (कमरभर ऊँचा), थम्भ व हिंडोले
12000 बगीचों की 1 हार
थंभों की 1 हार (प्रत्येक कोठरी को घेरकर)
(एक मंदिर की ऊँचाई-200 कोस)

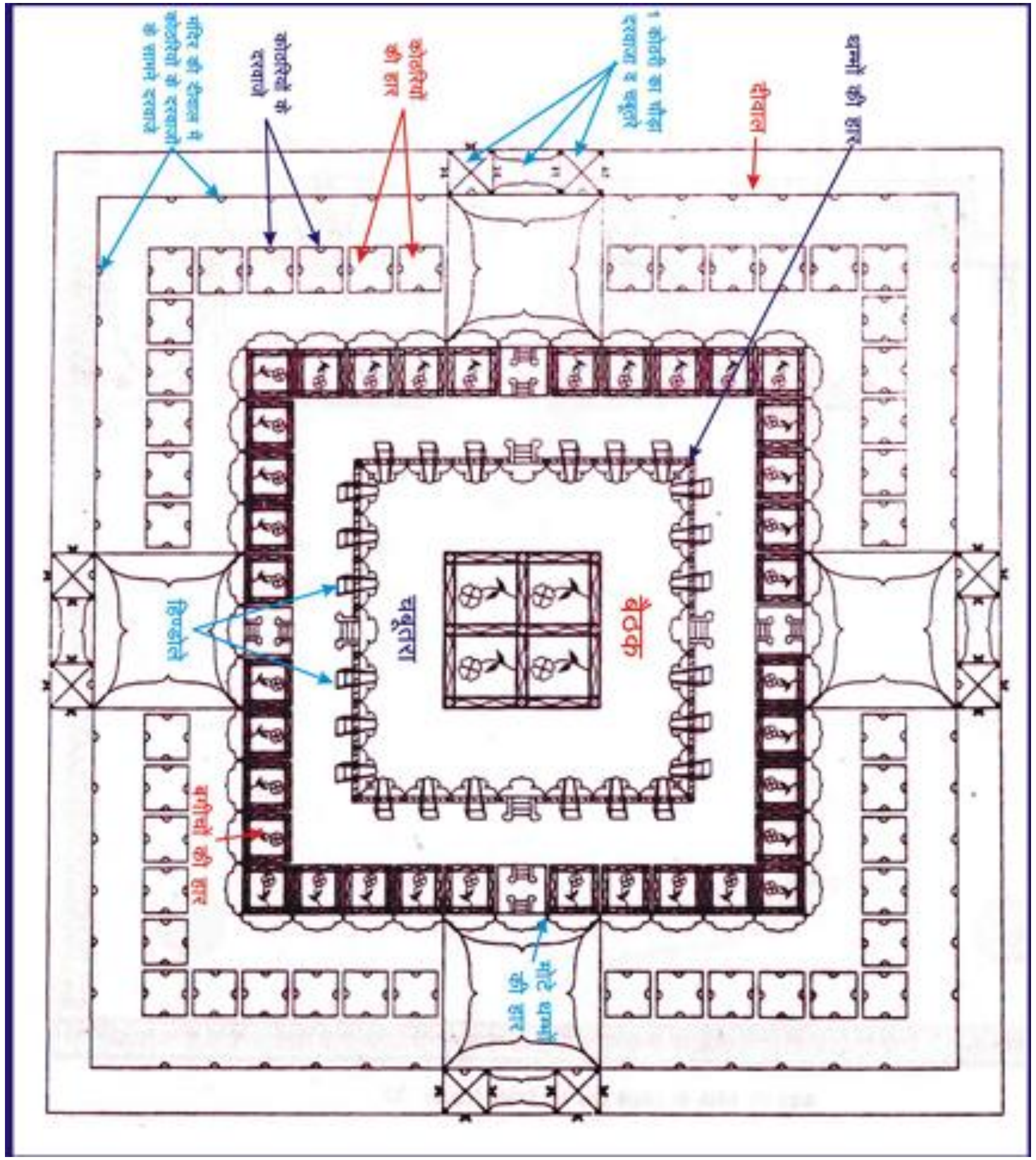
दीवाल
बैठक
चबूतरा
हिंडोले

मानिक पहाड़ - एक मंदिर में कोठररयों की शोभा

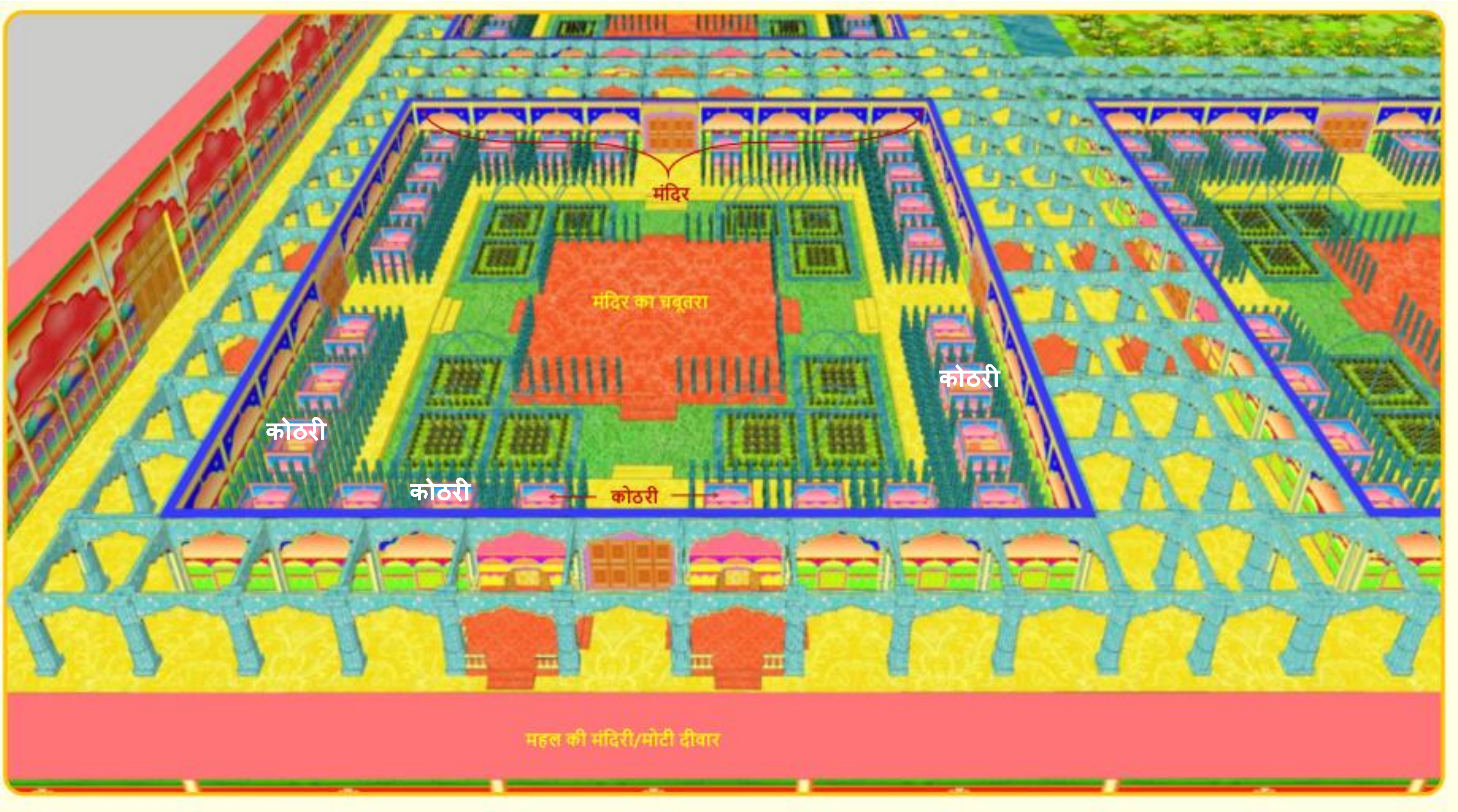

मानिक पहाड़ कोठररयों की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

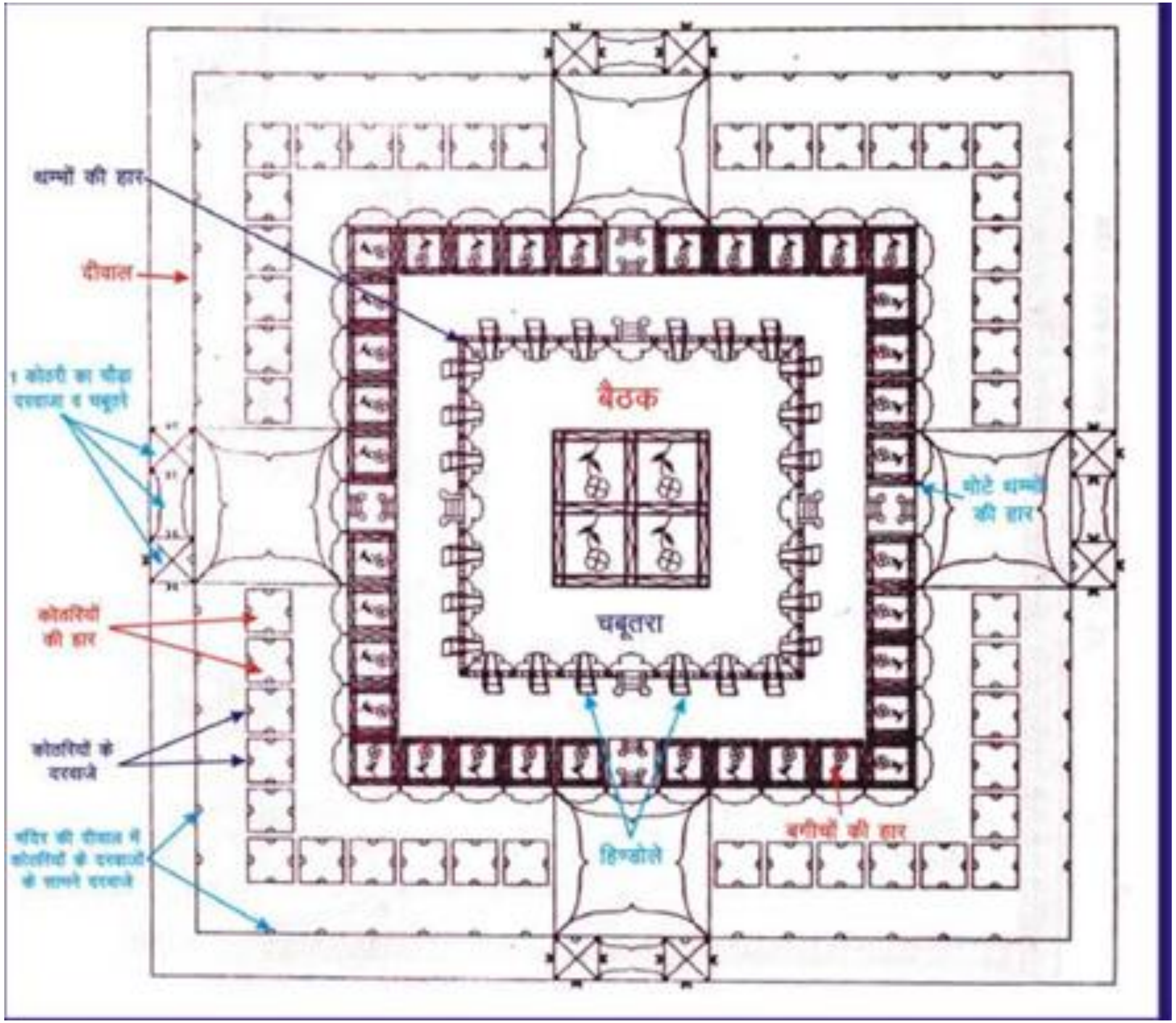

मानिक पहाड़ हवेली , महल , मंदिर & कोठरी की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

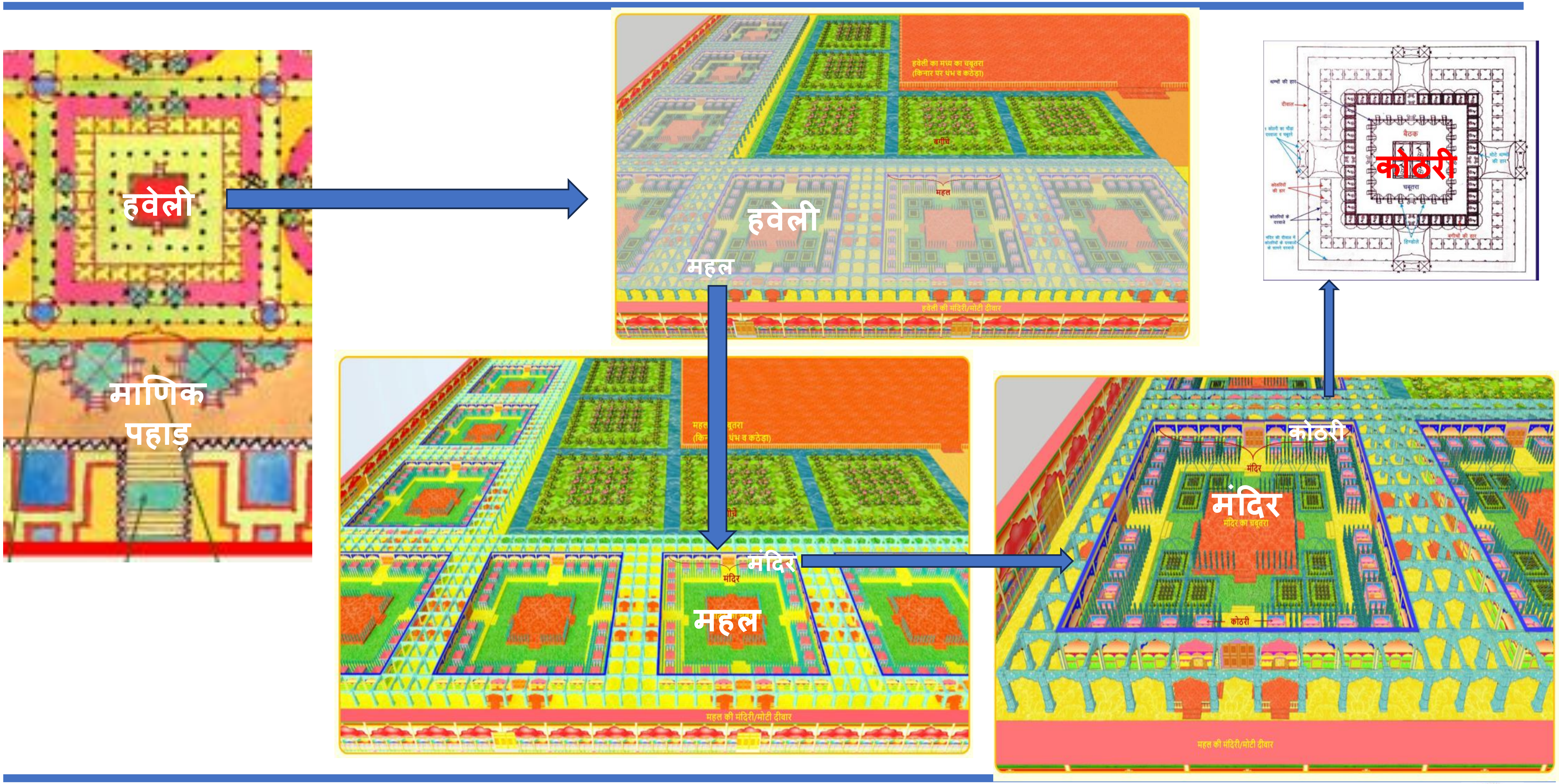

मानिक पहाड़ – हवेली की बाहरी दीवार की शोभा

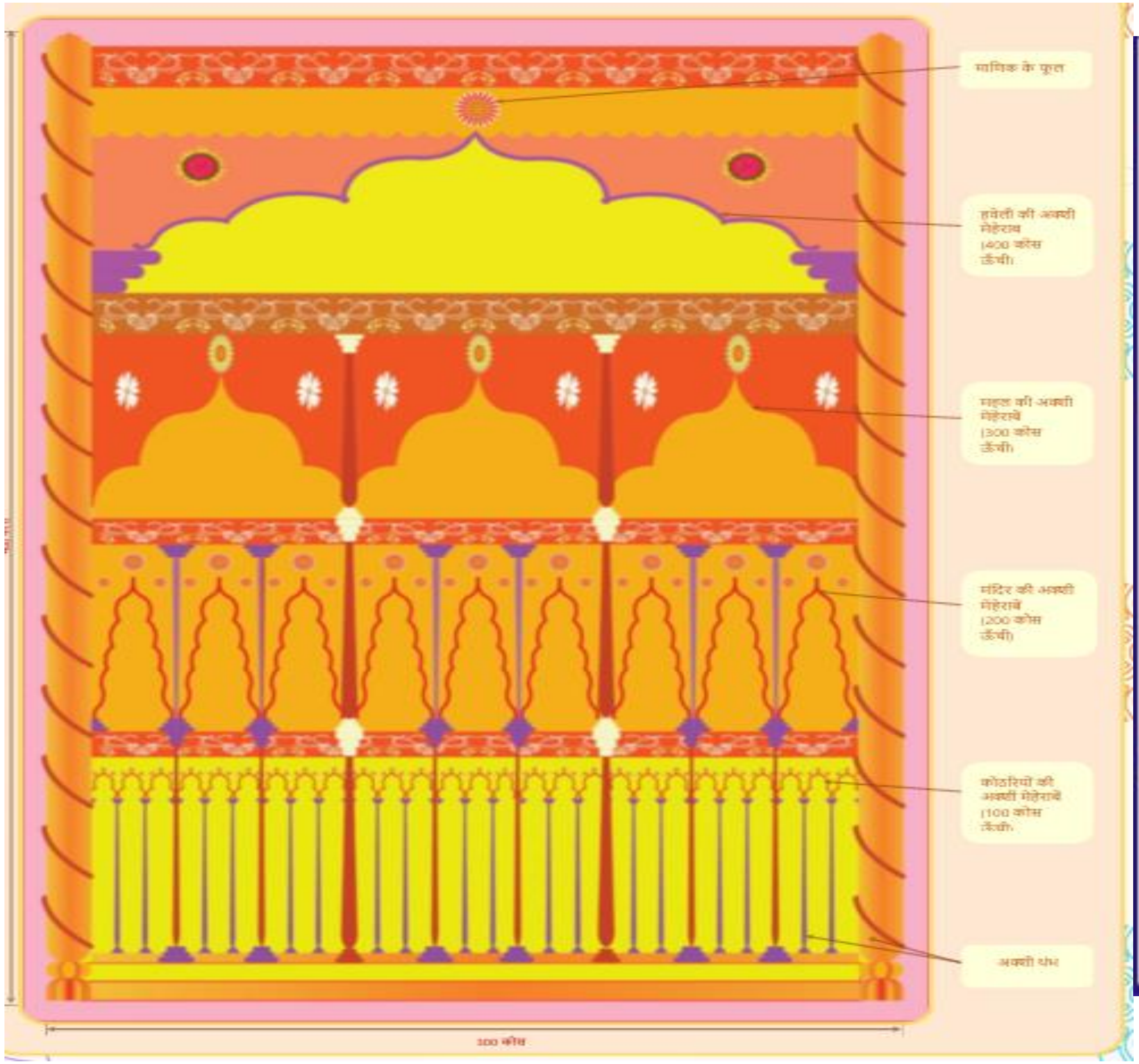

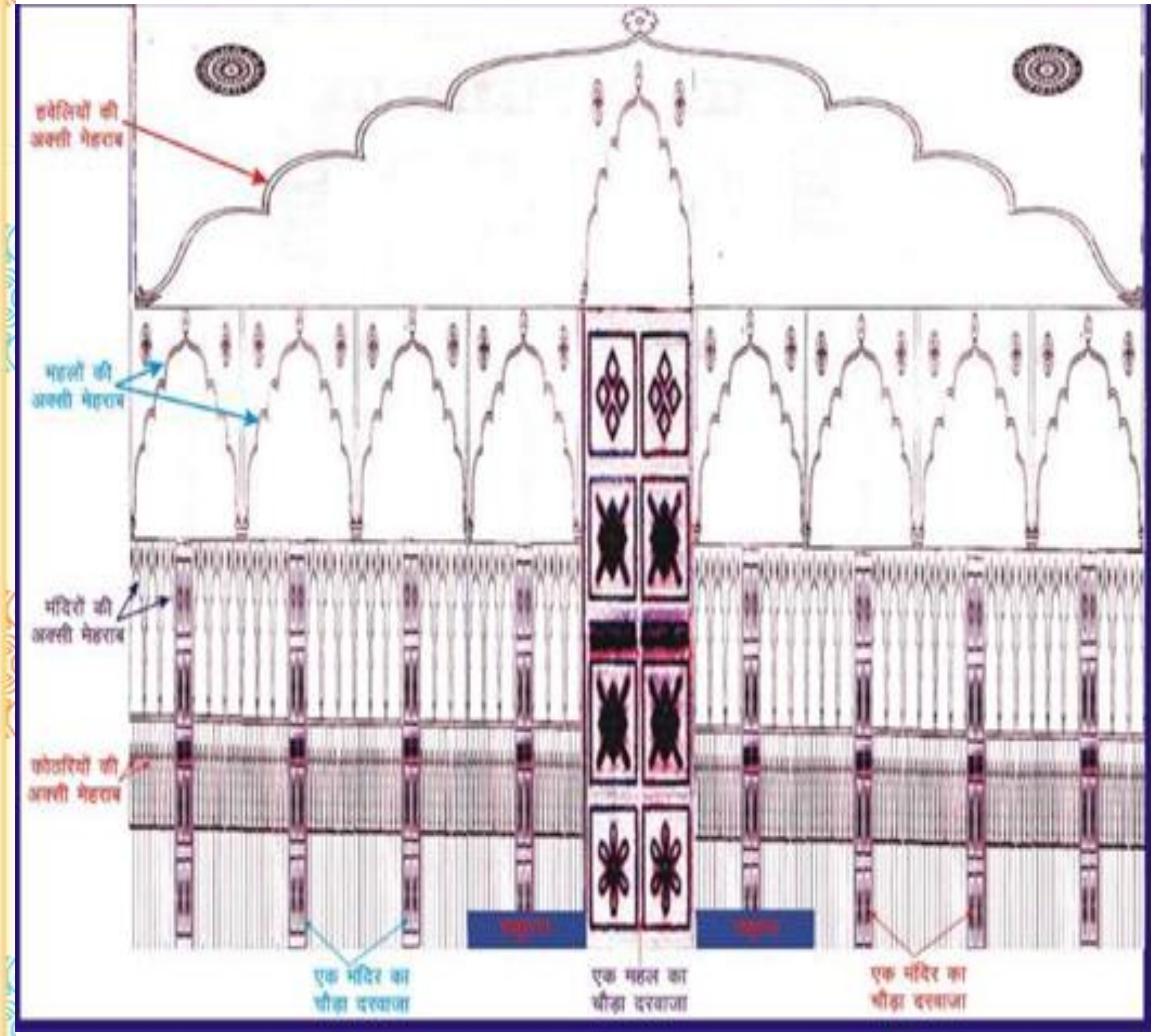

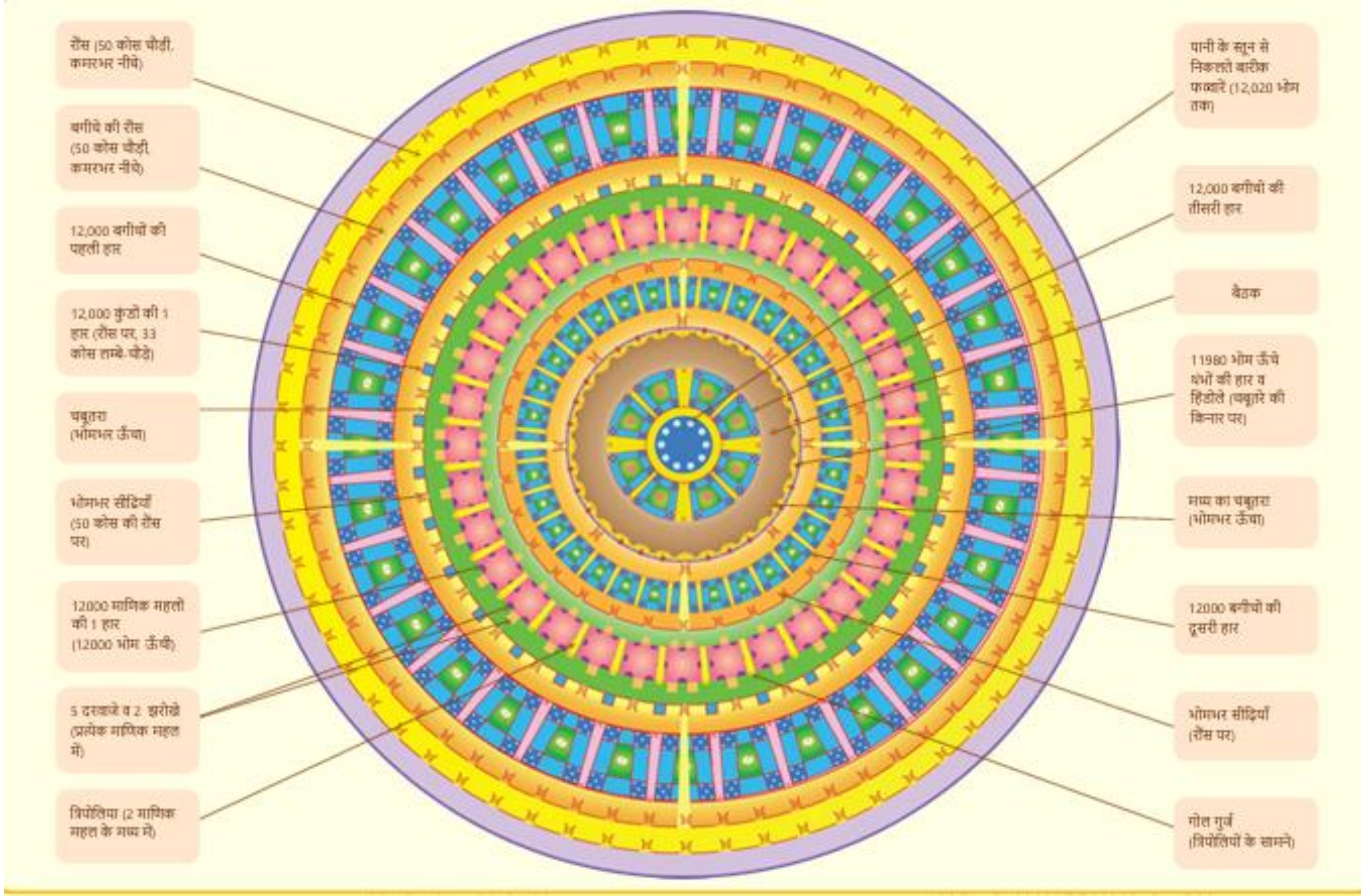
रौंस (50 कोस चौड़ी, कमरभर नीचे)
बगीचे की रौंस (50 कोस चौड़ी, कमरभर नीचे)
12,000 बगीचों की पहली हार
12,000 कुंडों की 1 हार (रौंस पर, 33 कोस लम्बे-चौड़े)
चबूतरा (भोमभर ऊँचा)
भोमभर सीढ़ियाँ (50 कोस की रौंस पर)
12000 माणिक महलों की 1 हार (12000 भोम ऊँची)
5 दरवाजे व 2 झरोखे (प्रत्येक माणिक महल में)
त्रिपोलिया (2 माणिक महल के मध्य में)
पानी के सून से निकलते बारीक फव्वारे (12,020 भोम तक)
12,000 बगीचों की तीसरी हार
बैठक
11980 भोम ऊँचे थंभों की हार व हिंडोले (चबूतरे की किनार पर)
मध्य का चबूतरा (भोमभर ऊँचा)
12000 बगीचों की दूसरी हार
भोमभर सीढ़ियाँ (रौंस पर)
गोल गुर्ज (त्रिपोलियों के सामने)

मानिक मोहोल रतन मय, झलकत जोत आकास।
नूर पूरन पूर भरया, रूह खोल देख नैन प्रकास।।५।।

मोहोल मध्य मानिक का, नूर पहाड़ मोहोल गिरदवाए।
बड़े बड़े जोड़े छोटे छोटे, बराबर जुगत सोभाए।।६।।

चारों तरफों मोहोल बीच ताल, चारों तरफों हिंडोले।
एक हिंडोले माहें झूलें, हक हादी रूहें भेले।।७।।

मध्य का चबूतरा
माणिक महल
गोल गुर्ज
भोम भर ऊँचा चबूतरा
बगीचों की हार
सीढ़ियाँ
चौरस हवेली
गोल हवेली

मानिक पहाड़ मध्य के चबूतरे की हिडोले की शोभा

ले जिमी से ऊपर मोहोल मानिक, कम ज्यादा कहूं नाहें ।
सरभर सोभा सब इमारतें, जल बन हिंडोले मोहोलों माहें ।।३।।

चारों तरफों मोहोल बीच ताल, चारों तरफों हिंडोले।
एक हिंडोले माहें झूलें, हक हादी रूहें भेले।।७।।

चारों तरफों ऐसे ही झूलें, हक हादी रूहें खेलत।
अर्स अजीम के बीच में, मोहोल अम्बर जोत धरत।।८।।

गोल गुर्जों की
चांदनी में कुण्ड
ताल देहेलान
टापूमहल
बगीचे
बगीचे
नहरें
नहरें
जालीद्वार से धाराएँ
कुण्ड पर थम्भ व हिण्डोले

गुर्जो के कुण्ड
टापूमहल
दहलान
ताल
नहरें
कुण्ड
बगीचे
बगीचे
बगीचे
नहरें
ताल के महल
जमीन

मानिक पहाड़ चादनी vs 1st भोम की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

1st भोम

चादनी

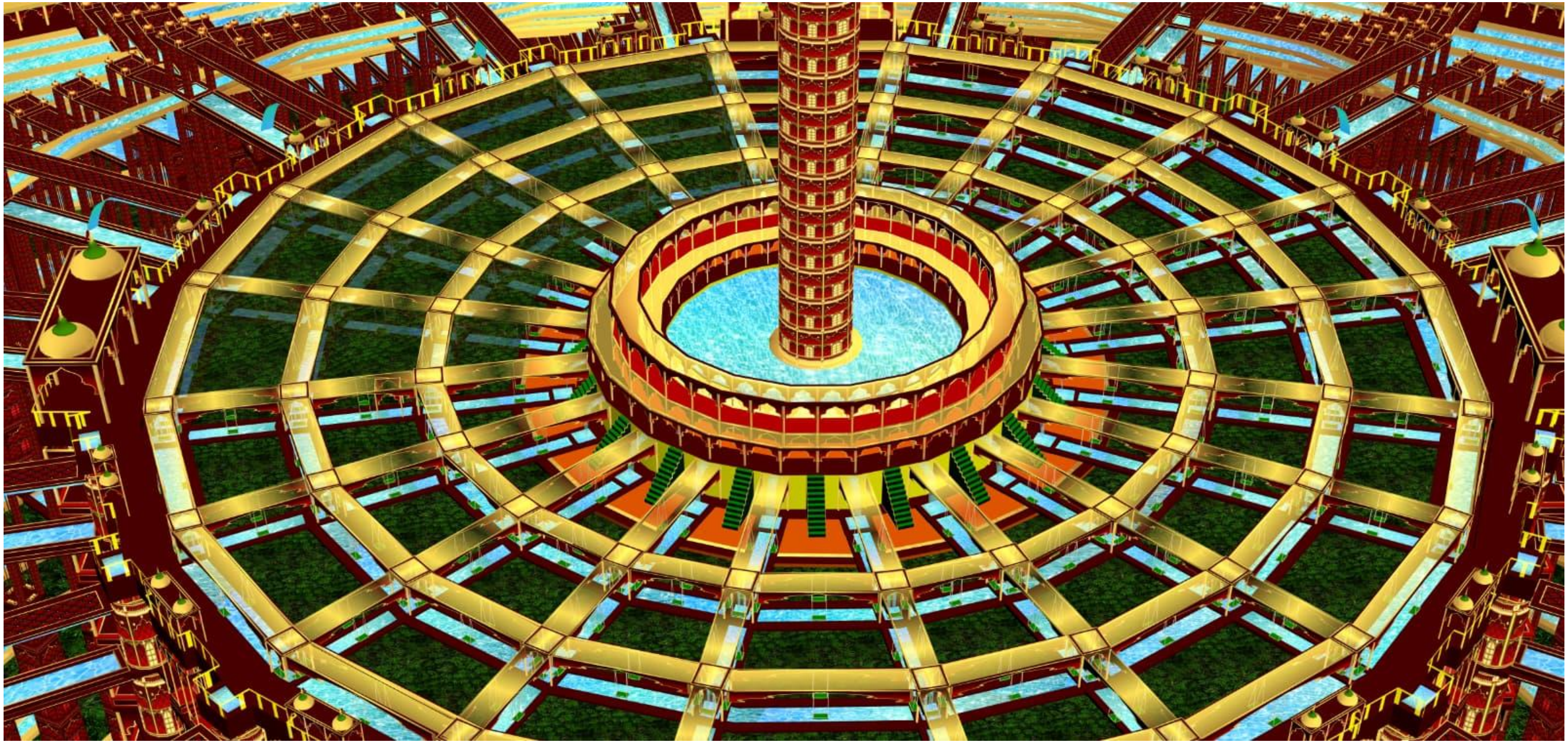

मानिक पहाड़ चादनी की शोभा

टापू मोहोल के चबूतरे के नीचे 12000 जालीद्वार
आये हैं जिनसे नीचे तालाबों में पानी गिरता है।

मानिक पहाड़ चादनी टापू महल , ताल & देहलान की शोभा

माणिक पहाड़ की चांदनी के मध्य में एक मोममर का ऊँचा गोल चबूतरा आया है जिस पर टापू मोहोल की शोभा है।
बाकि चबूतरे के नीचे बागबगीचों की शोभा आई है। 12000 हवेलियों के ऊपर 12000 बगीचे और दो थभों की हारों के ऊपर नहर आई है।

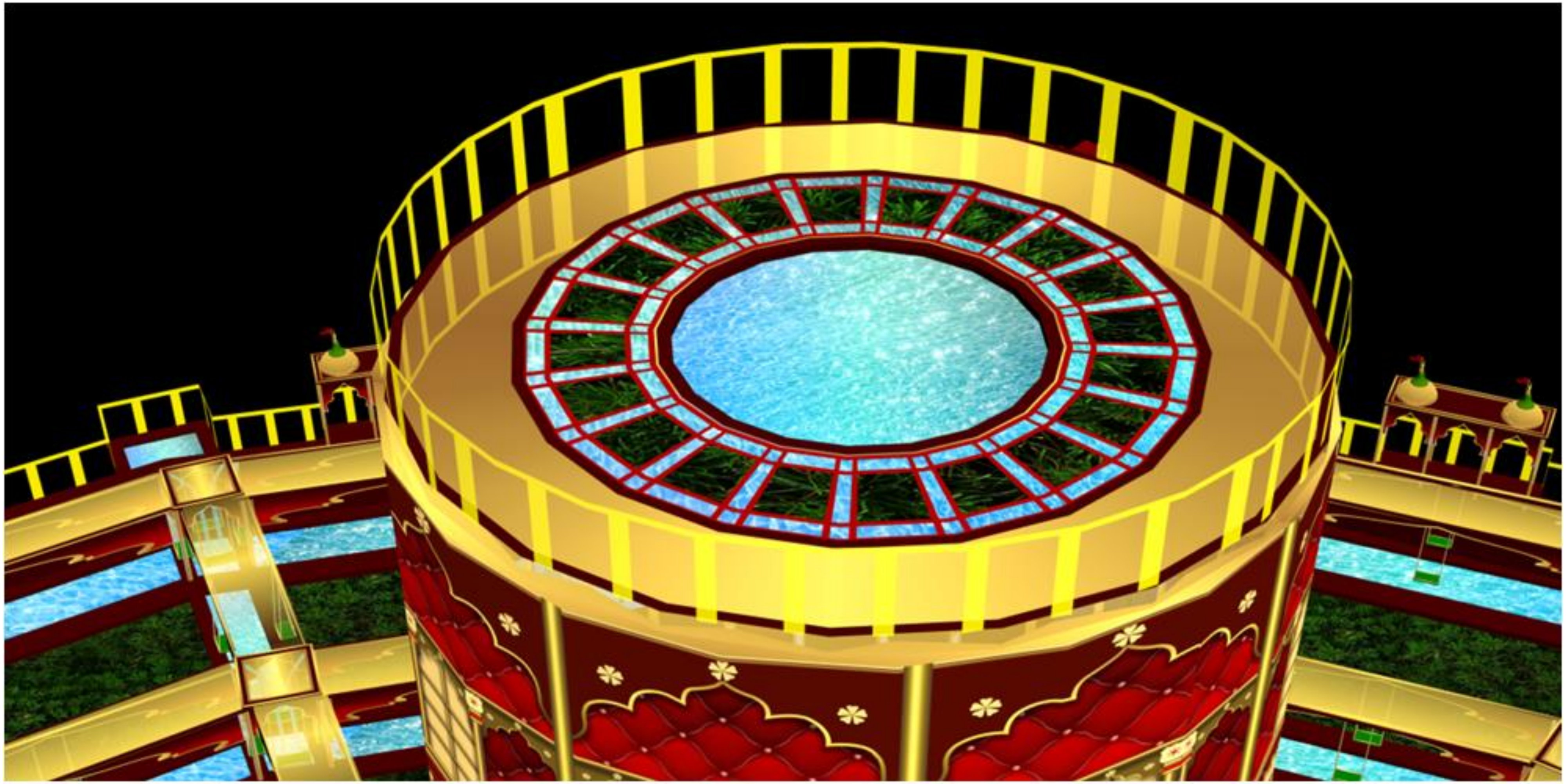

बैठक
बगीचे
बगीचे
कुण्ड
बगीचे
बगीचे
बगीचे
बैठक

मानिक पहाड़ टापू महल की चादनी की शोभा

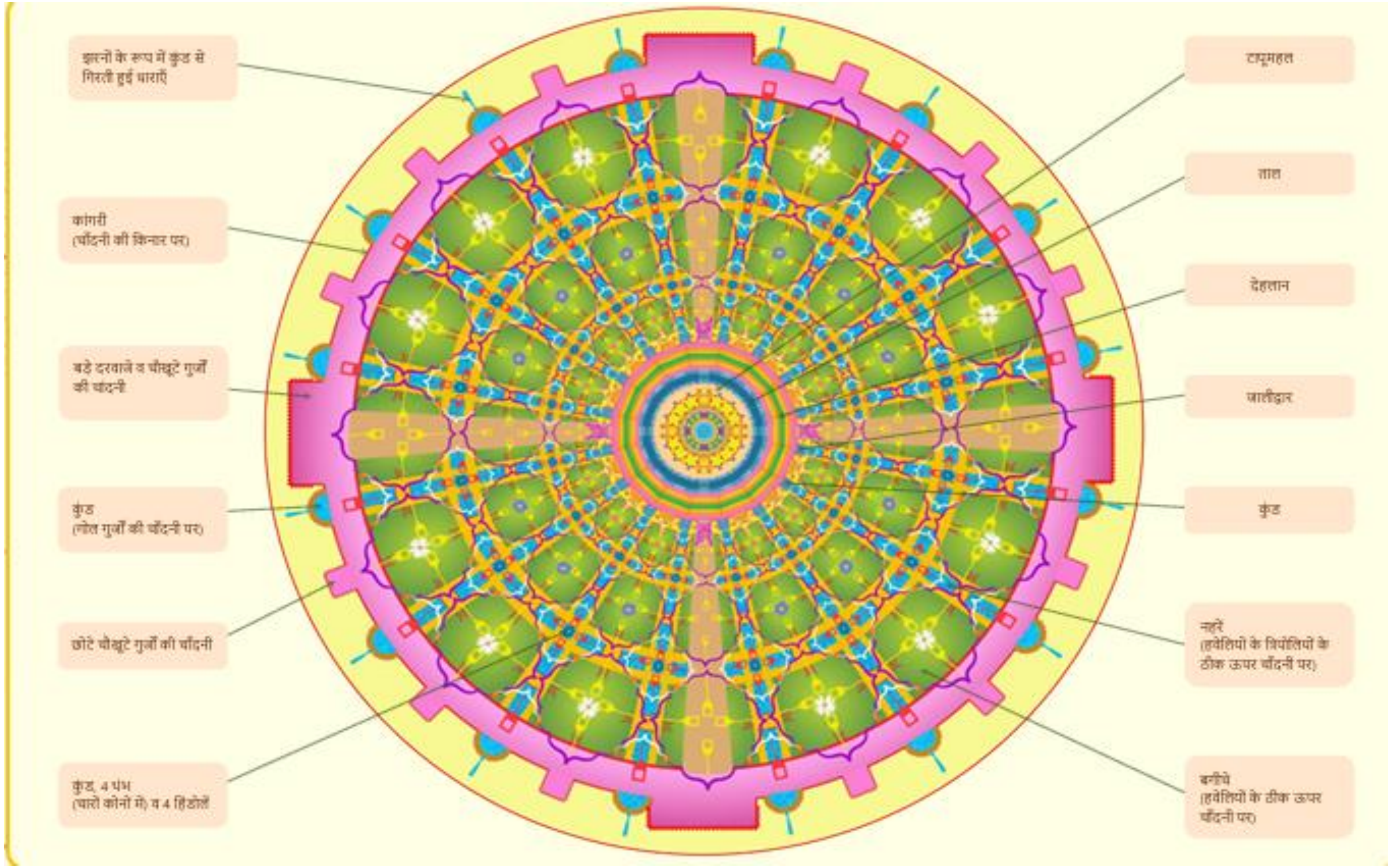

झरनों के रूप में कुंड से गिरती हुई धाराएँ
कांगरी (चाँदनी की किनार पर)
बड़े दरवाजे व चौखूटे गुर्जों की चांदनी
कुंड (गोल गुर्जों की चाँदनी पर)
छोटे चौखूटे गुर्जों की चाँदनी
कुंड, 4 थंभ (चारों कोनों में) व 4 हिंडोलें
टापूमहल
ताल
देहलान
जालीद्वार
कुंड
नहरें (हवेलियों के त्रिपोलियों के ठीक ऊपर चाँदनी पर)
बगीचे (हवेलियों के ठीक ऊपर चाँदनी पर)

मानिक पहाड़ टापू महल की चादनी की शोभा

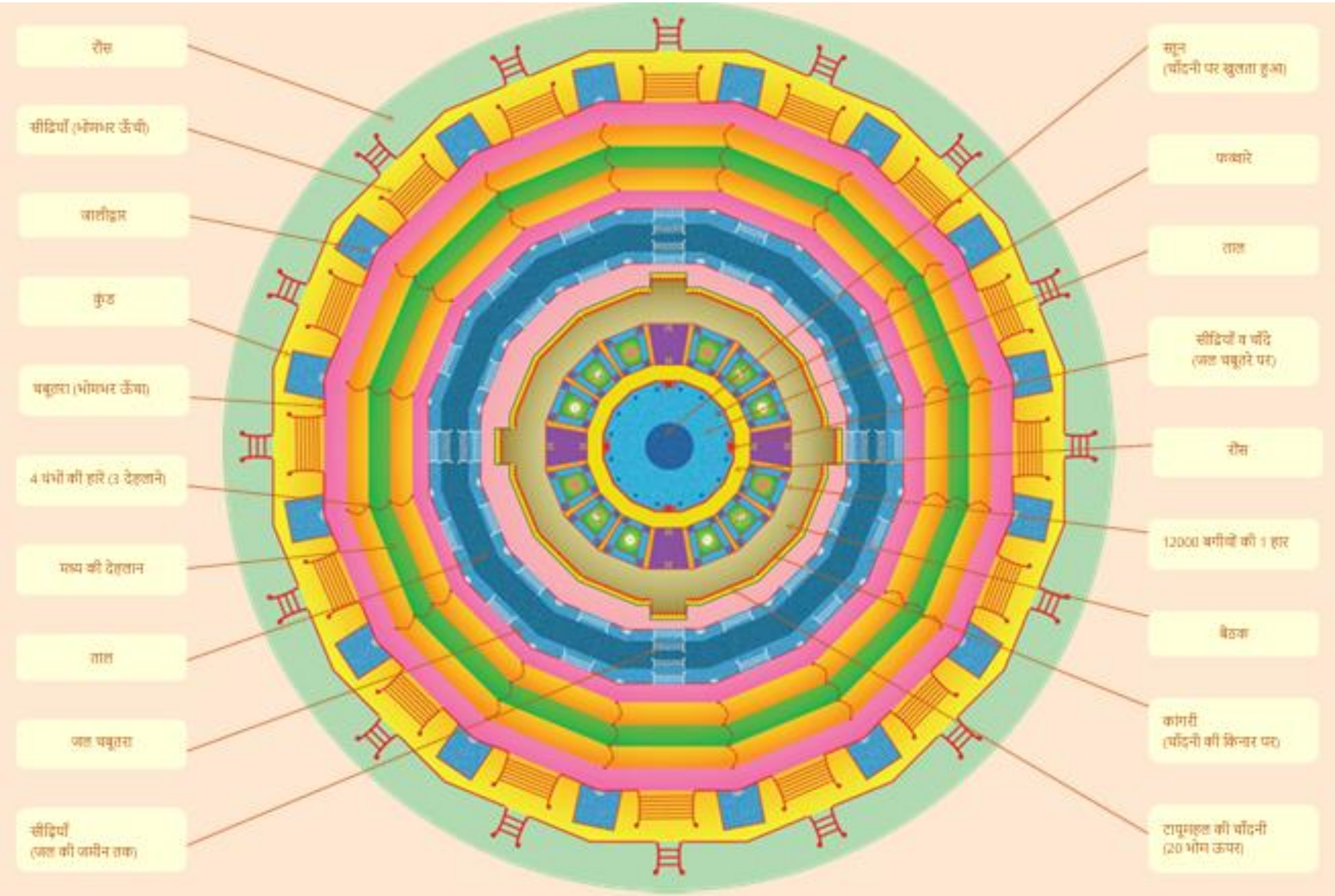

मानिक पहाड़ चादनी टापू महल , ताल & देहलान की शोभा

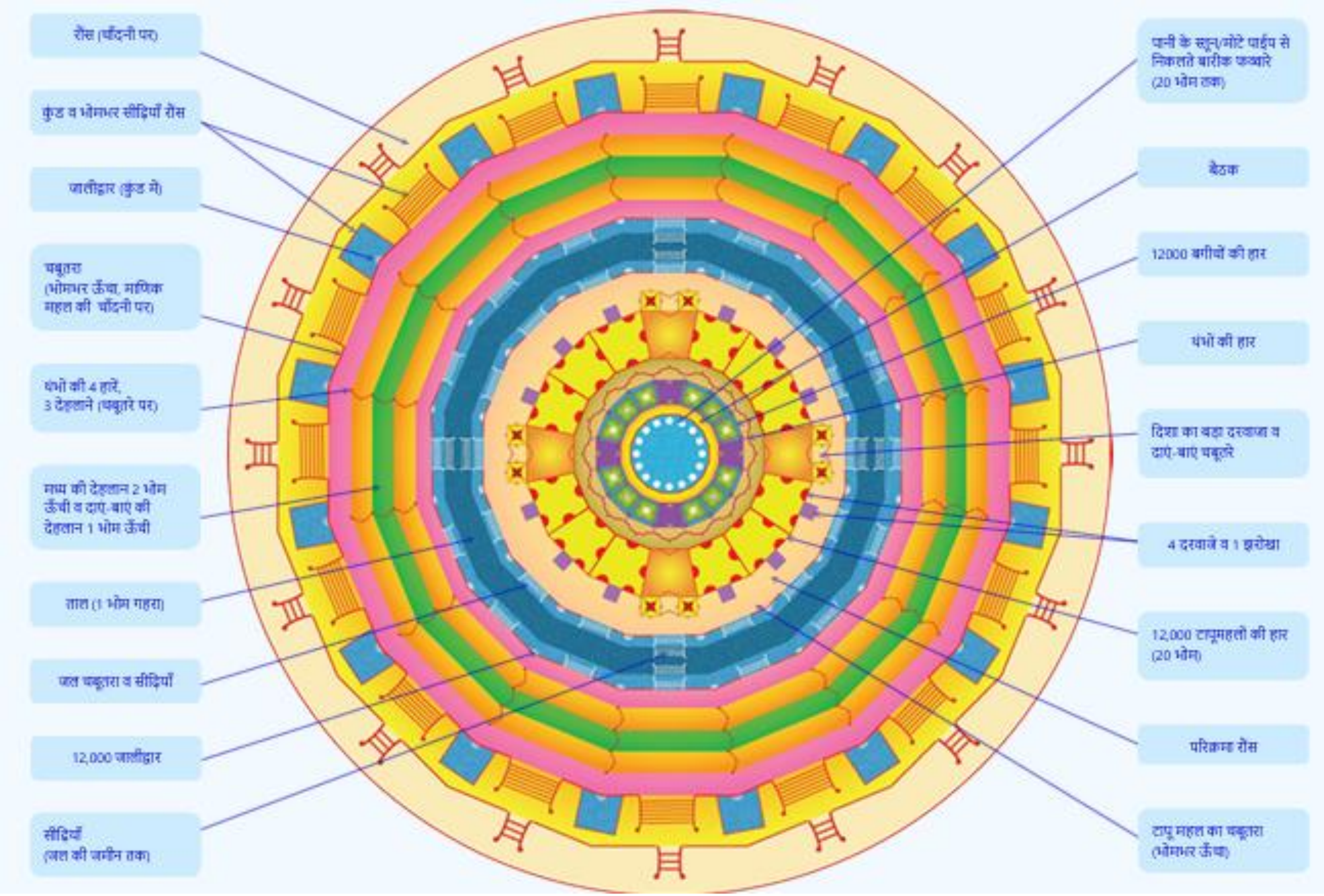

कई पहाड़ झिरने झिरें , कई नेहरें ऊपर चली जाएँ ।
कई उतरें ऊपर से चादरें , कई तालों बीच आए समाएँ ।।

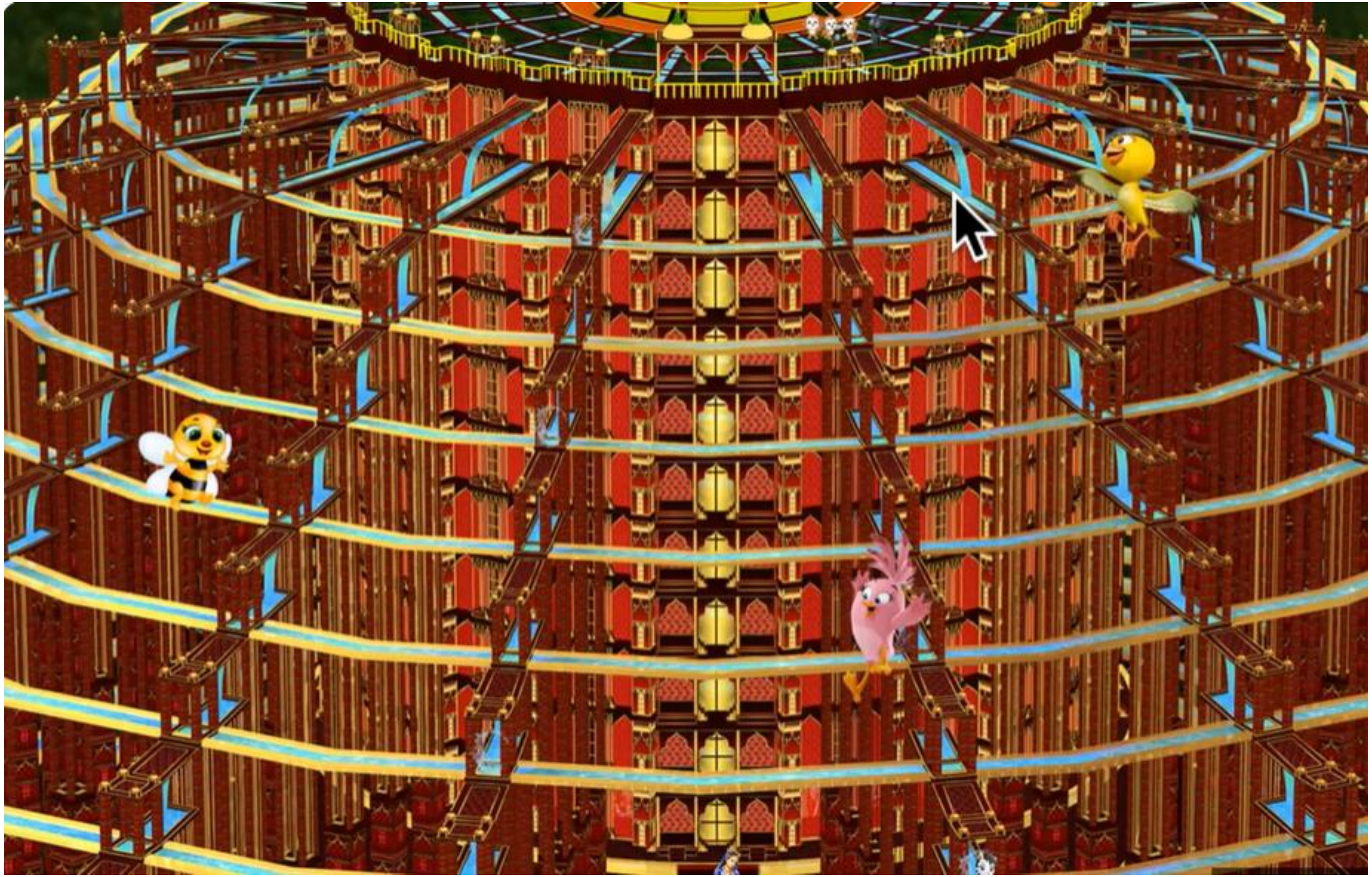

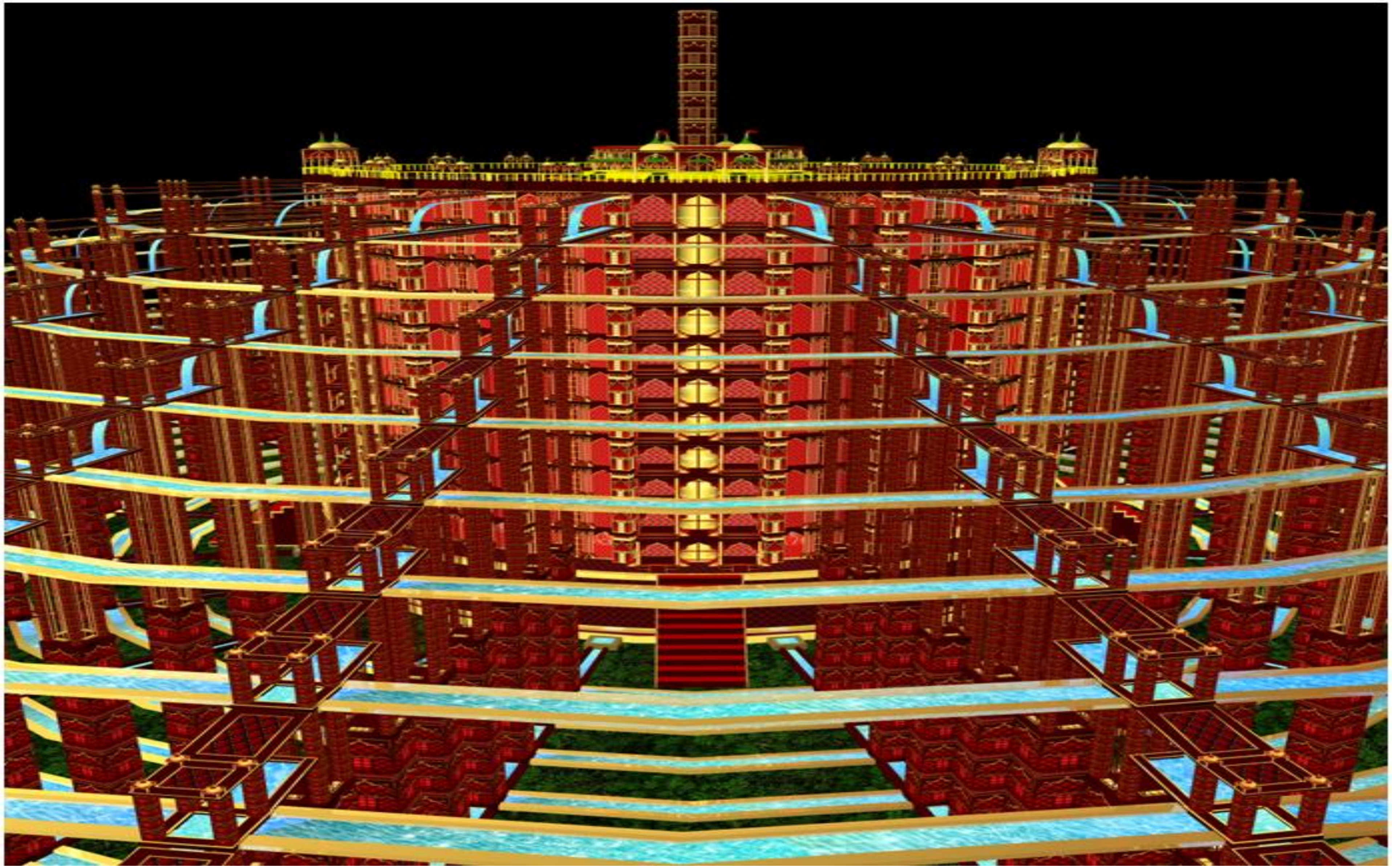

1 भोम ऊपर
गुम्मटें
1 भोम ऊपर
पुनः छज्जे
छज्जे व
बगीचे
एक एक भोम नीचे गिरते झरने
महाबिलंद
हिण्डोले
चांदनी में
ताल
छठी चांदनी
कोनों के महल
बगीचे
ताल के महल

मानिक पहाड़ की जमीन पर के बगीचे , नहेरें & हिण्डोले की शोभा

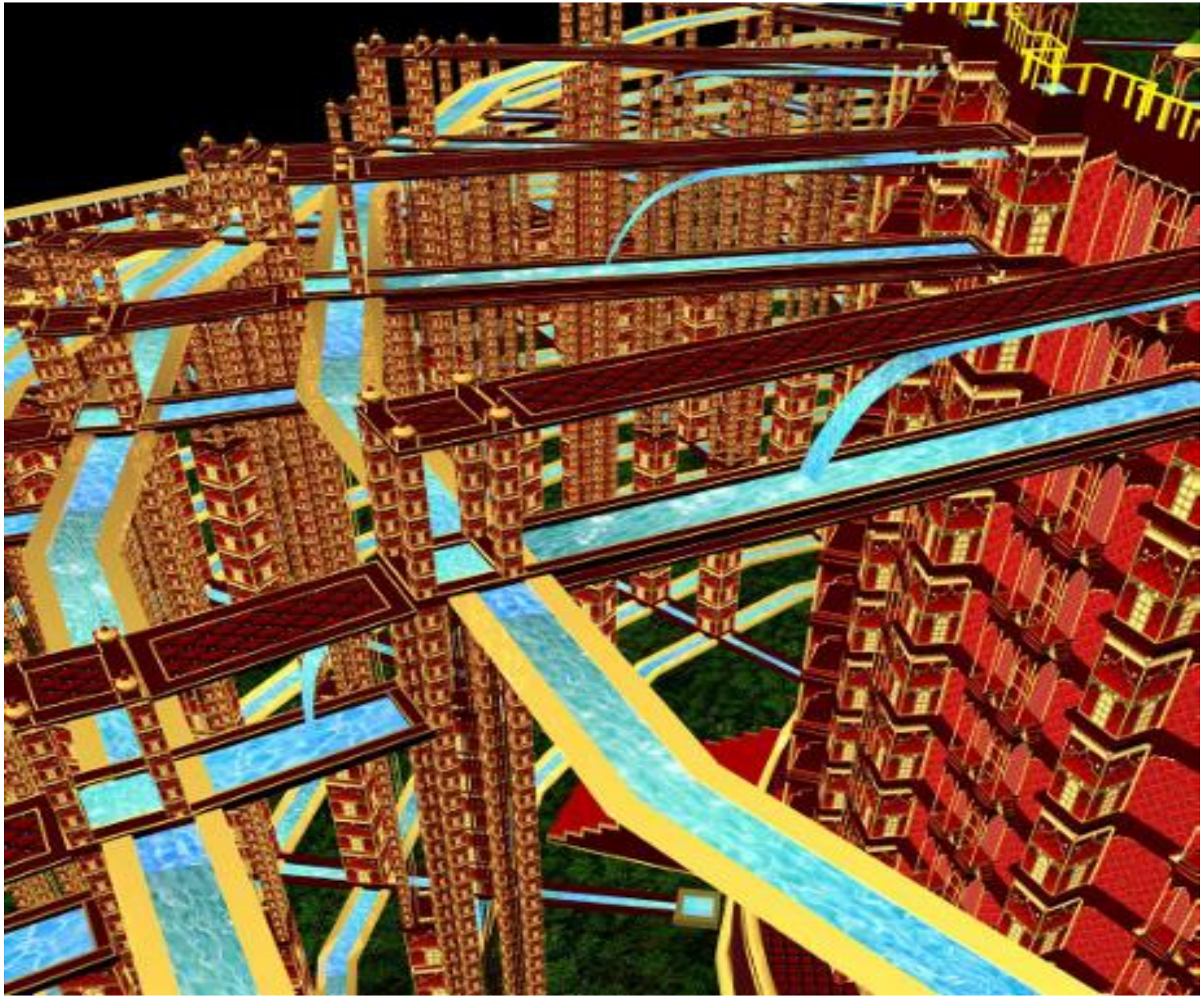

मानिक पहाड़ की जमीन पर के बगीचे , नहेरें & हिण्डोले की शोभा

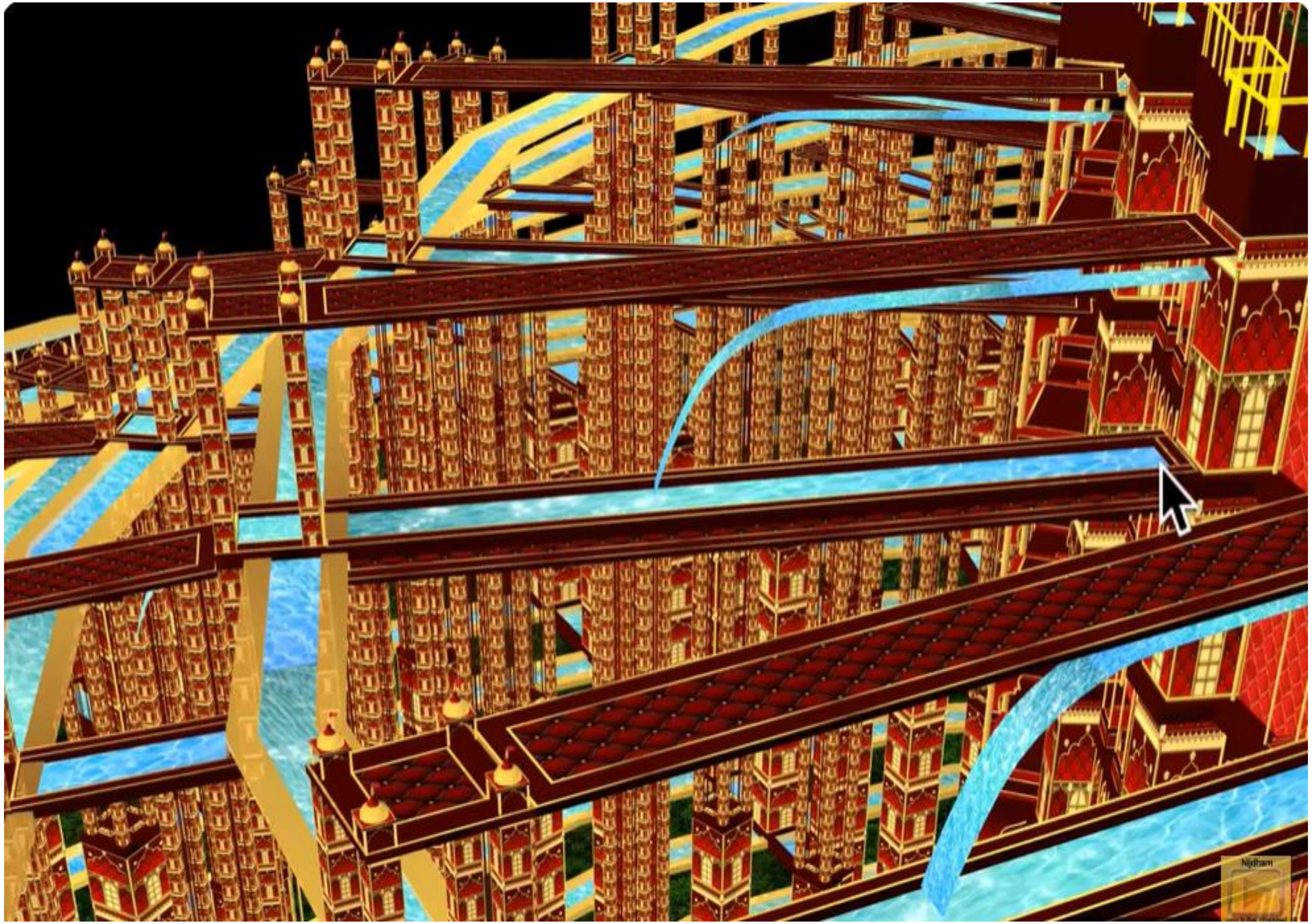

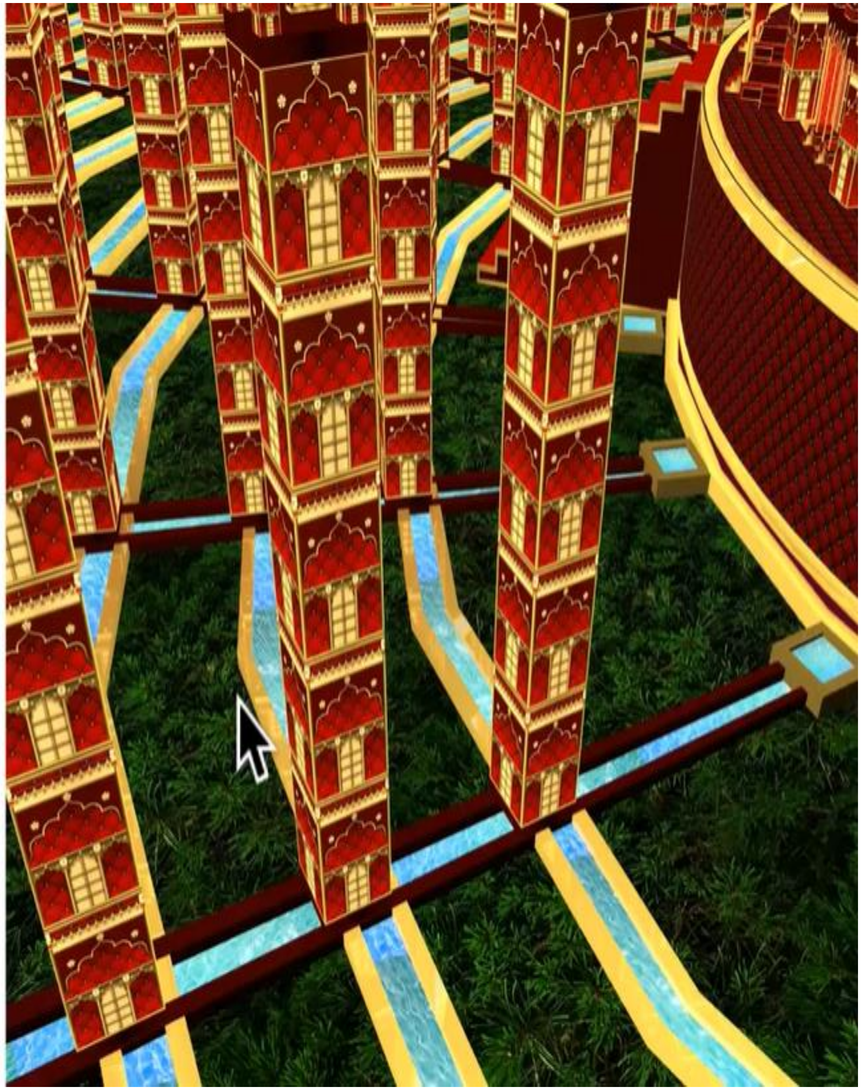

मानिक पहाड़ की जमीन पर के बगीचे , नहेरें & हिण्डोले की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

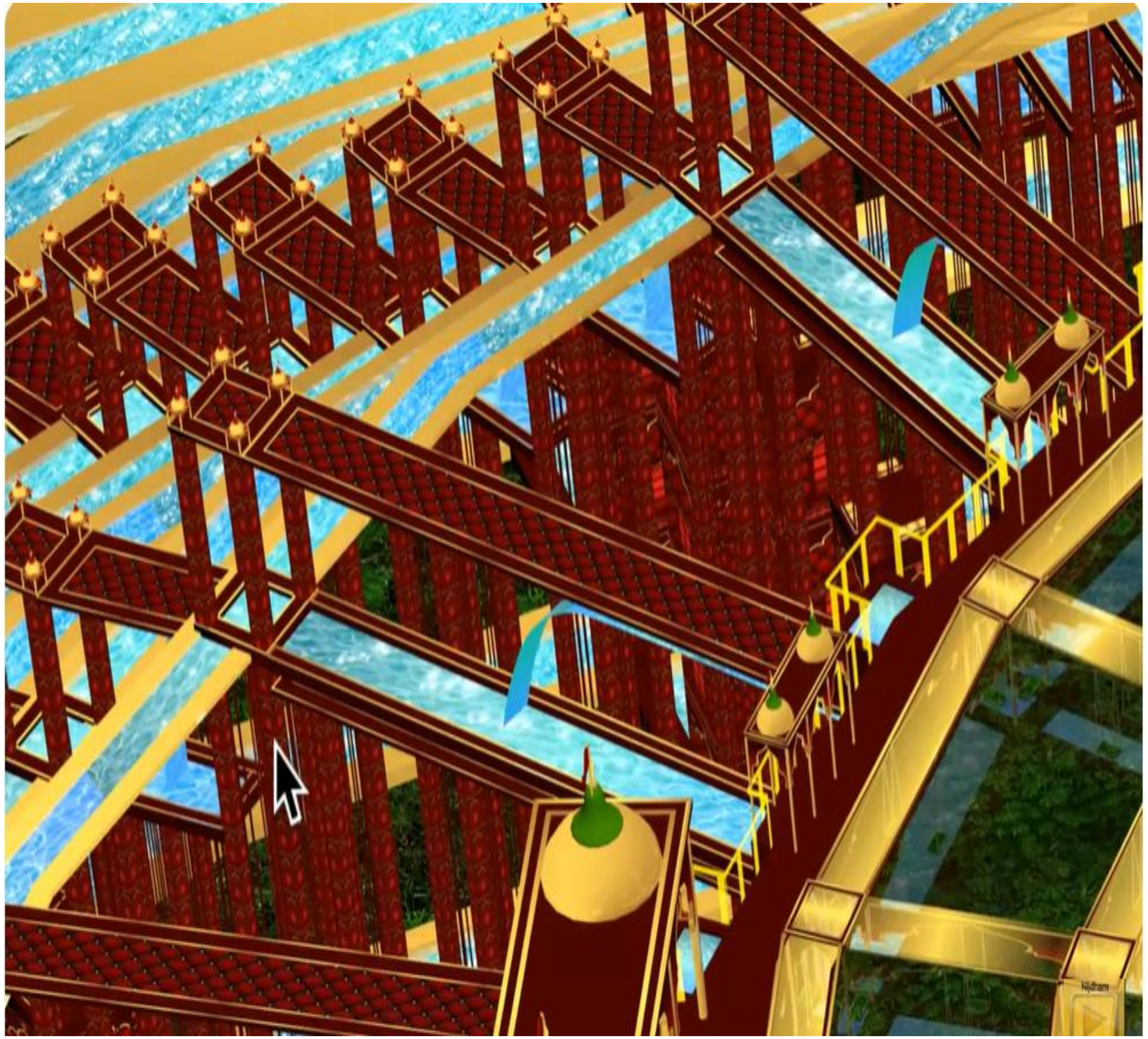

मानिक पहाड़ की जमीन पर के बगीचे , नहेरें & हिण्डोले की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

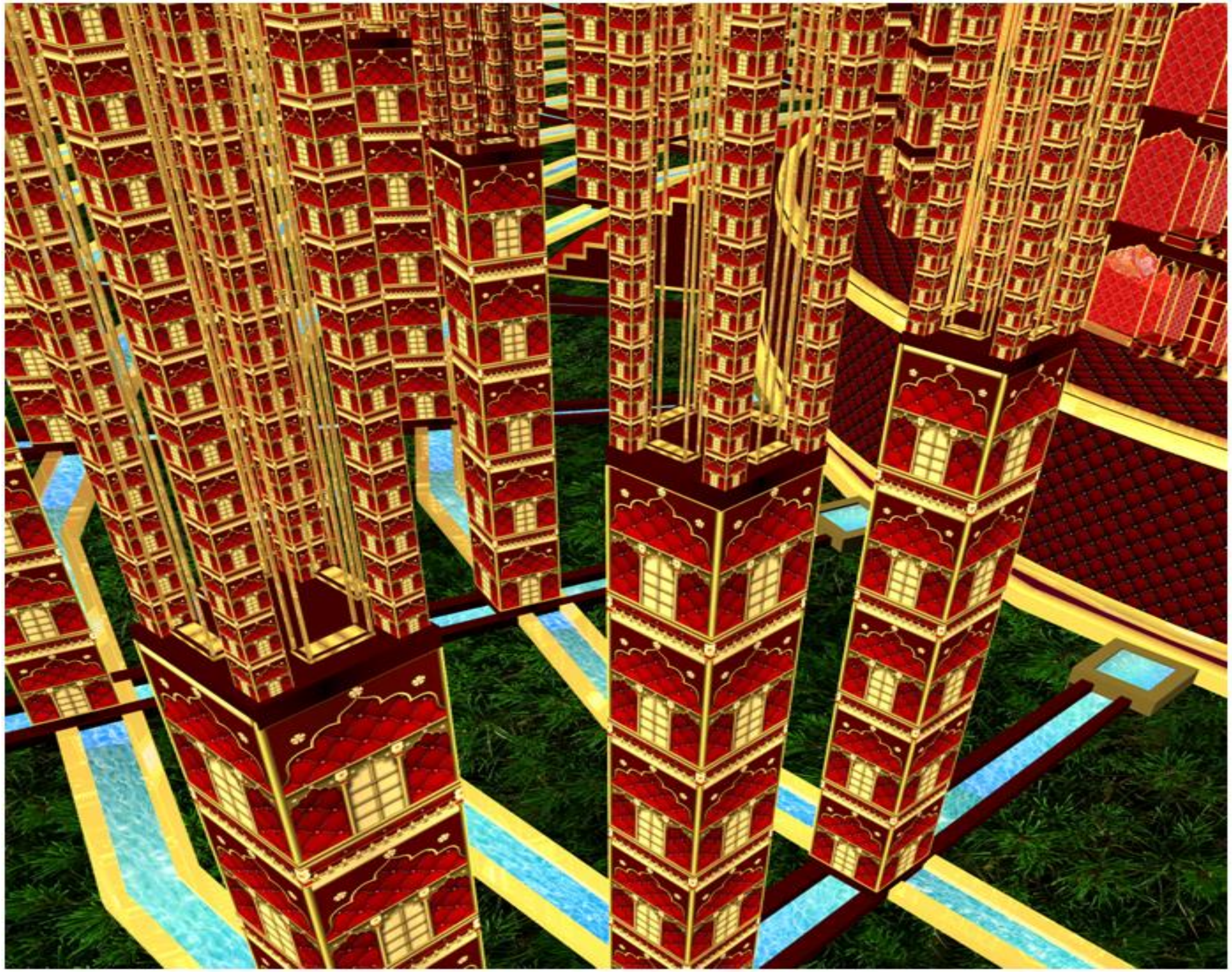

मानिक पहाड़ की जमीन पर के बगीचे , नहेरें & हिण्डोले की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

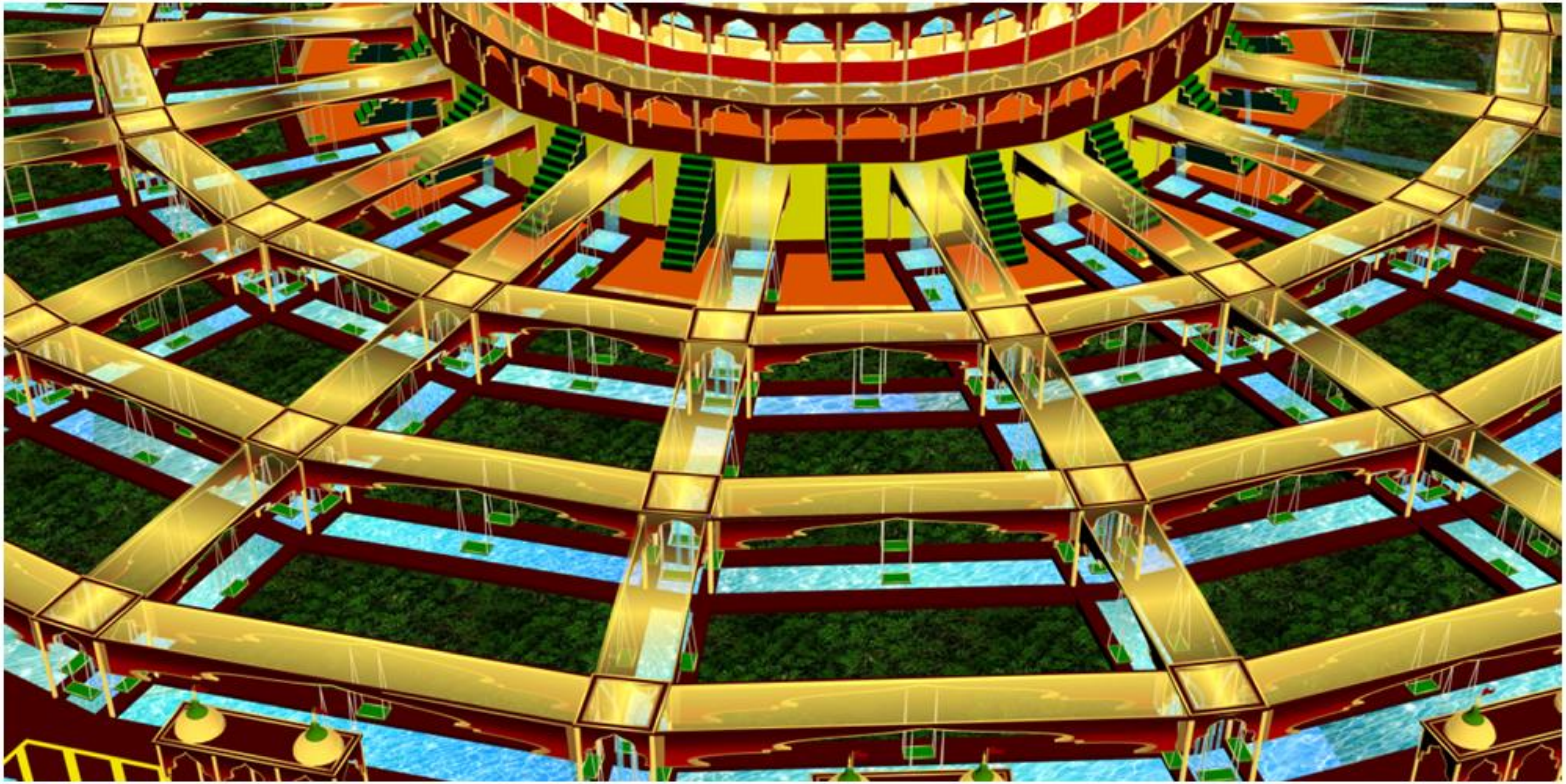

मानिक पहाड़ की जमीन पर के बगीचे , नहेरें & हिण्डोले की शोभा

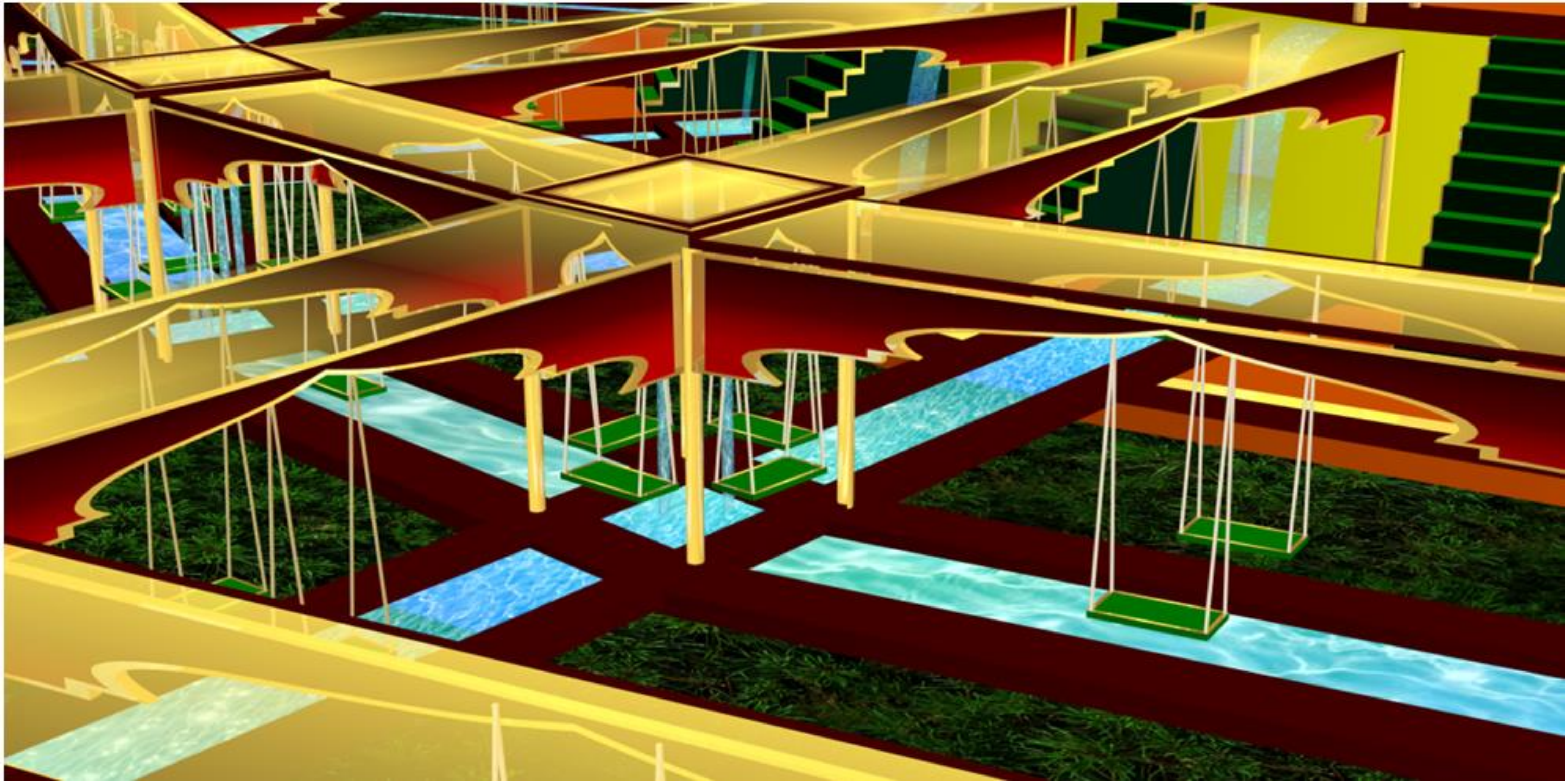

महानद की गृद 7 करोड़ 20 लाख कोस का है।
इसी महानद से 12000तालाबों की 12000हारें आई हैं,जो माणिक पहाड़ तक गई हैं

पाल पर दहलान
व हिण्डोले
महानद
पाल पर दहलान
व हिण्डोले

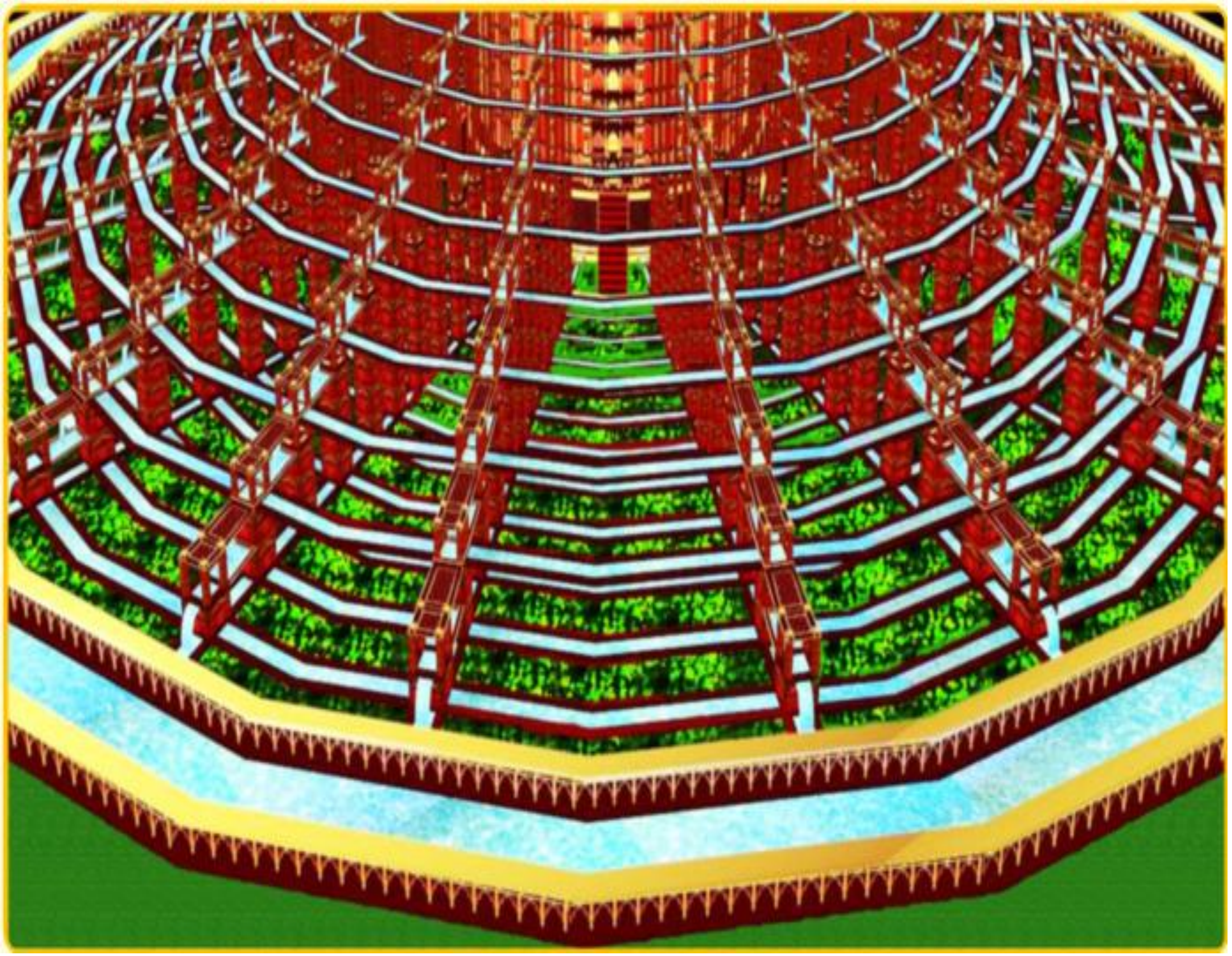

चारों तरफ घेर कर महानद आया है जिसके मध्य में ताल और
ताल के दोनों तरफ एक हांस की चौड़ी पाल आई है जिसपर दो स्तम्भों
की पक्तियों की शोभा आई है। इनकी एक मोम दूसरी चांदनी है
स्तम्भों की महराबों में चार हिण्डोलों की ताली पड़ती है।

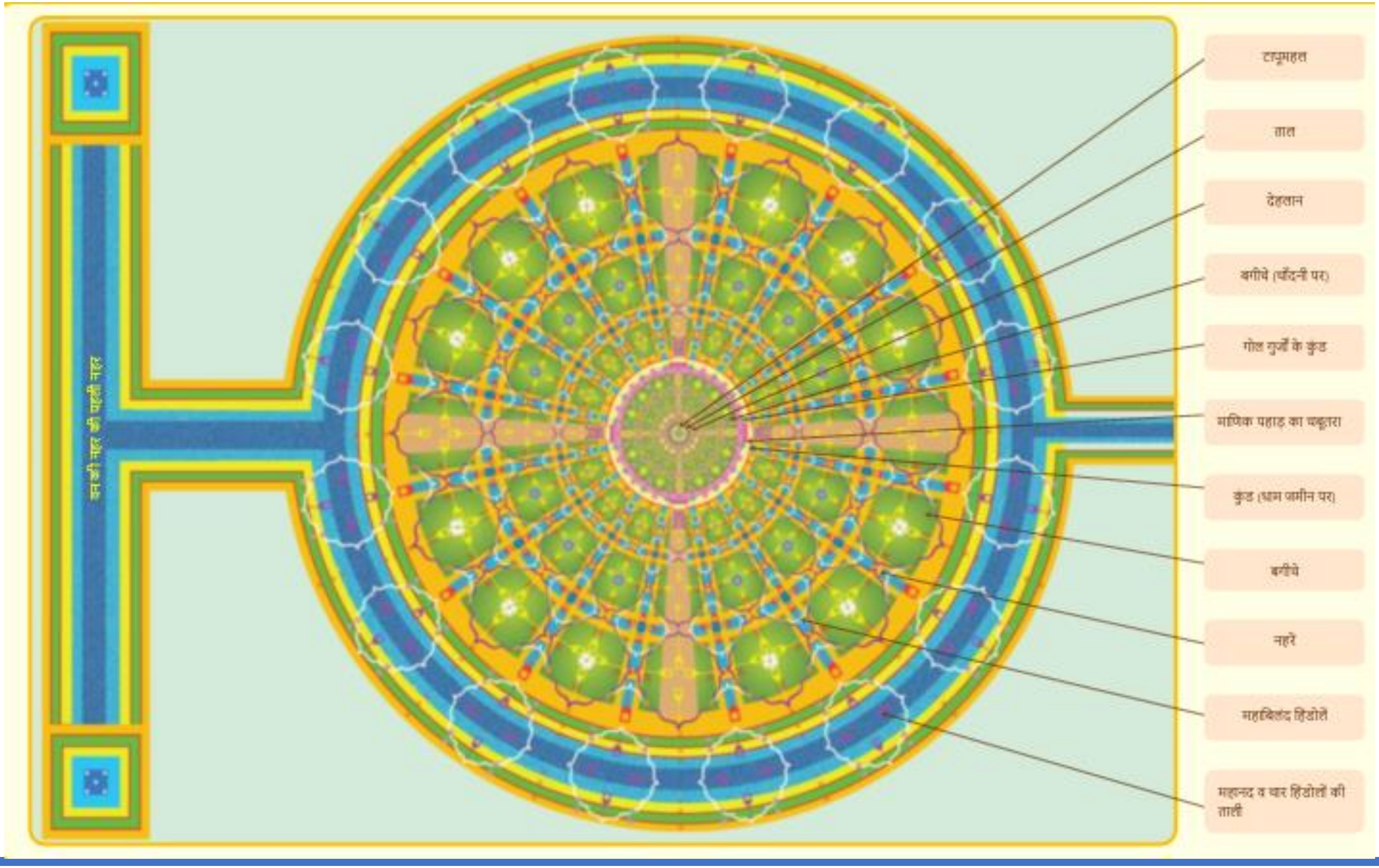
टापूमहल
ताल
देहलान
बगीचे (चाँदनी पर)
गोल गुर्जों के कुंड
माणिक पहाड़ का फव्वारा
कुंड (आम जमीन पर)
बगीचे
नहरें
महाबिलंद हिंडोले
महानद व चार हिंडोलों की ताली

महावन
मधुवन
बड़ोंवन
माणिक पहाड़

मानिक पहाड़ की लीला

कहे बारे हजार मोहोल फिरते, कही हुकमें तिनकी बात ।
तिन हर मोहोलों बीच बीच में, बारे बारे हजार मोहोलात ॥२०॥

अटक रहे थे इतहीं, बीच आवने मोमिनों दिल ।
इन अर्स रूहों वास्ते एता कह्या, विचार करें सब मिल ॥२१॥

जो मोमिन किए हकें बेसक, सो लेंगे दिल विचार ।
अर्स दिल एही मोमिनों, तो ल्याए बीच सुमार ॥२२॥

आगे आए मिली इत नदियां, चक्राव ज्यों पानी चलत ।
तिन पीछे नदियां मोहोल बन की, जाए सागरों बीच मिलत ॥२३॥

क्यों कर कहूं मैं पौरियां, और क्यों कर कहूं झरोखे ।
देख देख मैं देखिया, न आवे गिनती में ए ॥२४॥

मैं गिरद कही चौरस कही, पर कई हर भांत हवेली ।
जाके आवें ना मोहोल सुमार में, तो क्यों जाए गिनी पौरी ॥२५॥

जब हक याद जो आवहीं, तब रूह देख्या चाहे नजर ।
दिल अर्स मारया इन घाव से, सो ए मुरदा सहे क्यों कर ॥२६॥

देखो महामत मोमिनों जागते, जो हक इलमें दिए जगाएँ ।
करे सो बातें हक अर्स की, तूं पी इस्क तिनों पिलाएँ ॥२७॥

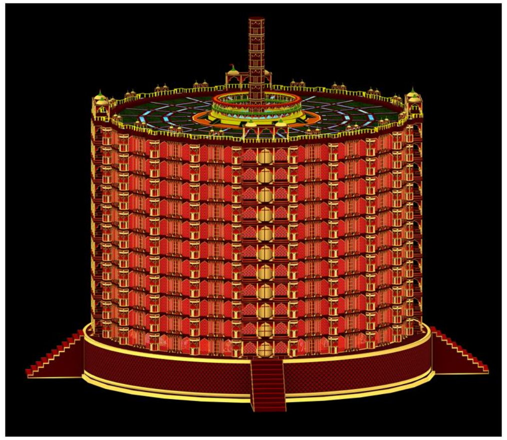

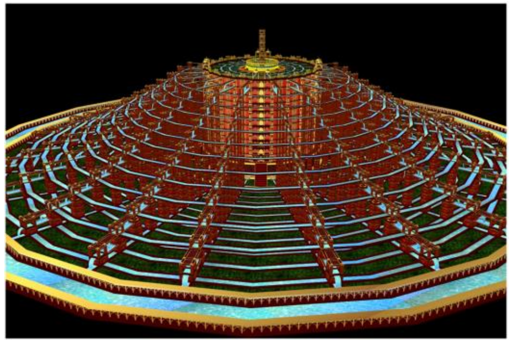

पहाड़ मानिक मोहोल कई, यों पहाड़ मोहोल अनेक ।
सब अपार अलेखे इन जिमी, कहां लो कहूं विवेक ॥१॥

बड़े पहाड़ जो हिंडोले, बारे हजार बैठत ।
एकै छप्पर खटके, हक हादी साथ हींचत ॥२॥

अनेक पहाड़ कई हिंडोले, जुदी जुदी कई जुगत ।
जो सुख हिंडोले पहाड़ के, जुबां कर ना सके सिफत ॥३॥

कई हिंडोले पहाड़ में, ऊपर से ढांपेल ।
सुख लेवें कई विध के, रूहें करें कई खेल ॥४॥

कई सुख लें मीठे पहाड़ के, कई विध हींचे हिंडोले ।
कई सुख हिंडोले बाहेर, बीच पहाड़ के खुले ॥५॥

एक जरा इन जिमी का, जोत न माए आसमान ।
जोत जवेरों पहाड़ों की, इत कहा कहे जुबान ॥६॥

कई मोहोल पहाड़ों मिने, कई मोहोल पहाड़ों ऊपर ।
जो बन पहाड़ या जिमिएं, सो इन जुबां कहूं क्यों कर ॥९॥

ना सुख कहे जाएं जिमी के, ना सुख कहे जाएं बन ।
ना सुख कहे जाएं मोहोलों के, ना सुख कहे जाएं पहाड़न ॥१०॥

कई पहाड़ झिरने झिरें, कई ऊपर नेहेरें चली जाएं ।
कई उतरें ऊपर से चादरें, कई तालों बीच आए समाए ॥११॥

नेहेरें बन में होए चलीं, सो नेहेरें कई मिलत ।
आगूं आए मोहोल बन के, इत चली कई जुगत ॥१२॥

ए सुख हमारे कहां गए, ए जो खेल होत दिन रात ।
हक के साथ हम सब रूहें, हँस हँस करती बात ॥१३॥

मानिक पहाड़ - महाबिलंद हिण्डोले की लीला

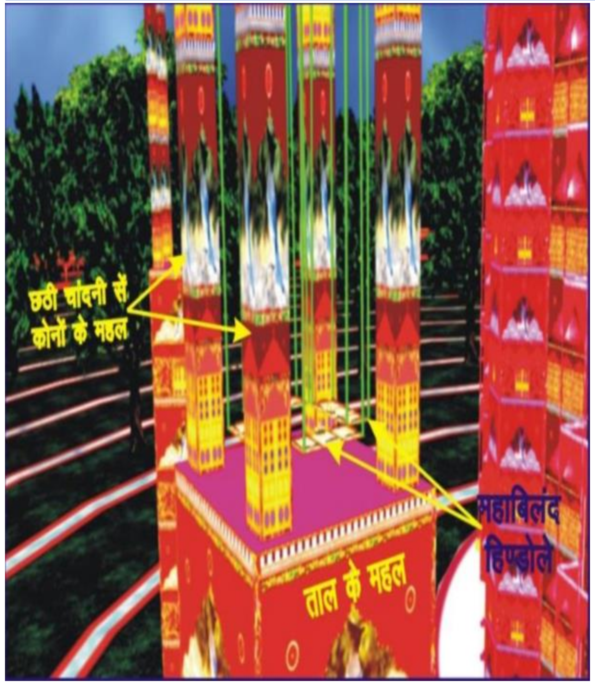

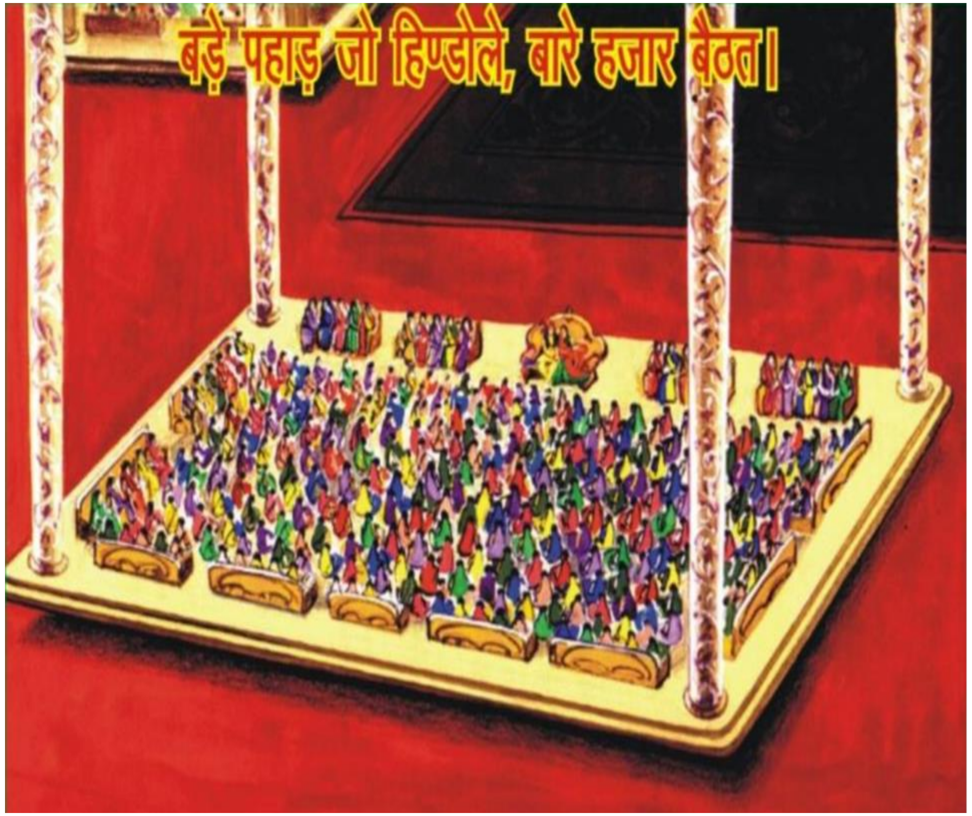

बड़े पहाड़ जो हिण्डोले , बारे हजार बैठत ।
एकै छप्पर खट के , हक हादी साथ हींचत ।।

बड़े पहाड़ जो हिंडोले, बारे हजार बैठत ।
एकै छप्पर खटके, हक हादी साथ हींचत ।।२।।
अनेक पहाड़ कई हिंडोले, जुदी जुदी कई जुगत ।
जो सुख हिंडोले पहाड़ के, जुबां कर ना सके सिफत ।।३।।
कई हिंडोले पहाड़ में, ऊपर से ढांपेल ।
सुख लेवें कई विध के, रूहें करें कई खेल ।।४।।
कई सुख लें मीठे पहाड़ के, कई विध हींचे हिंडोले ।
कई सुख हिंडोले बाहेर, बीच पहाड़ के खुले ।।५।।

रंगमोहल दक्षीण दिशा की शोभा – मानिक पहाड़

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

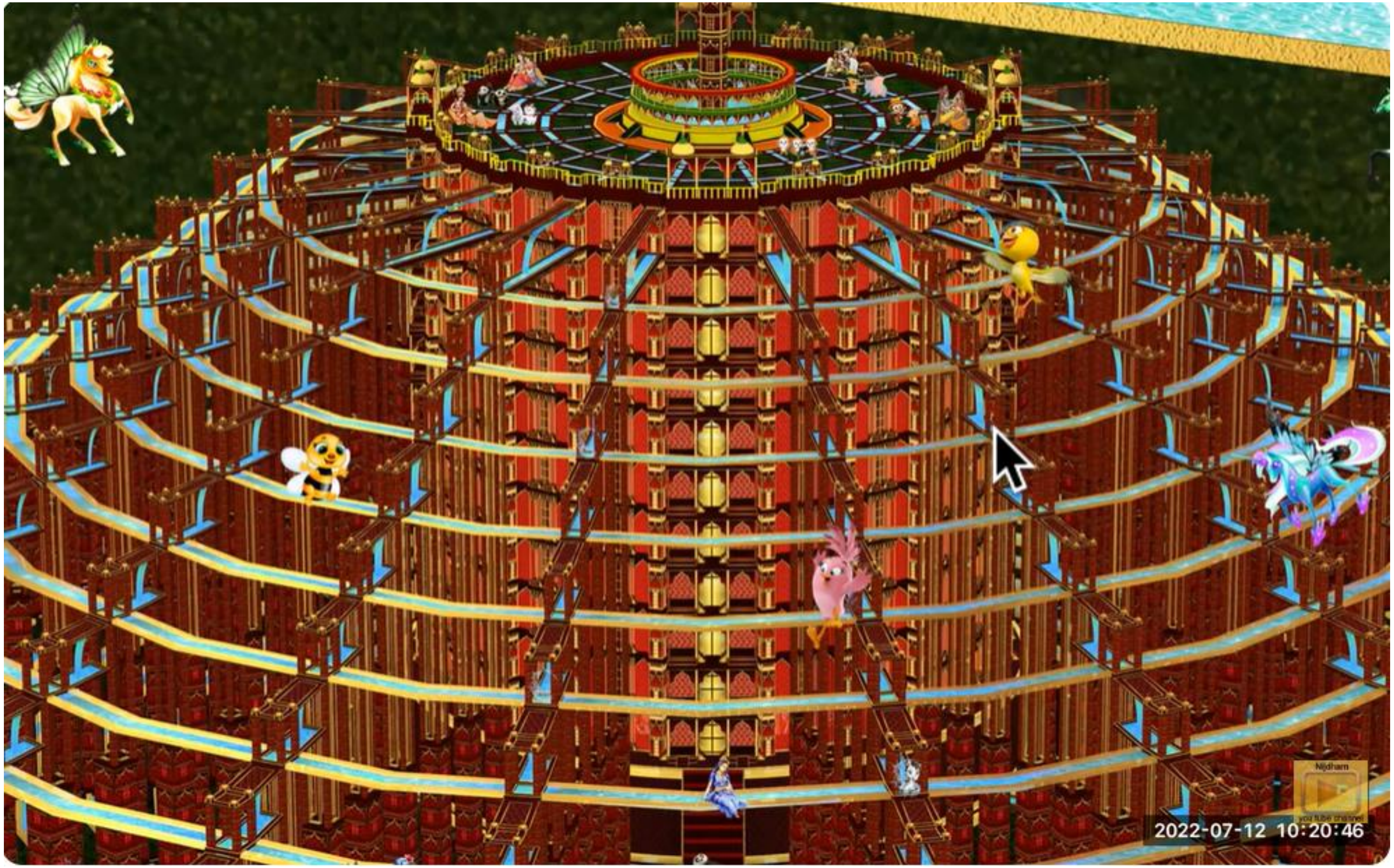

Sahoor

OR

Quiz